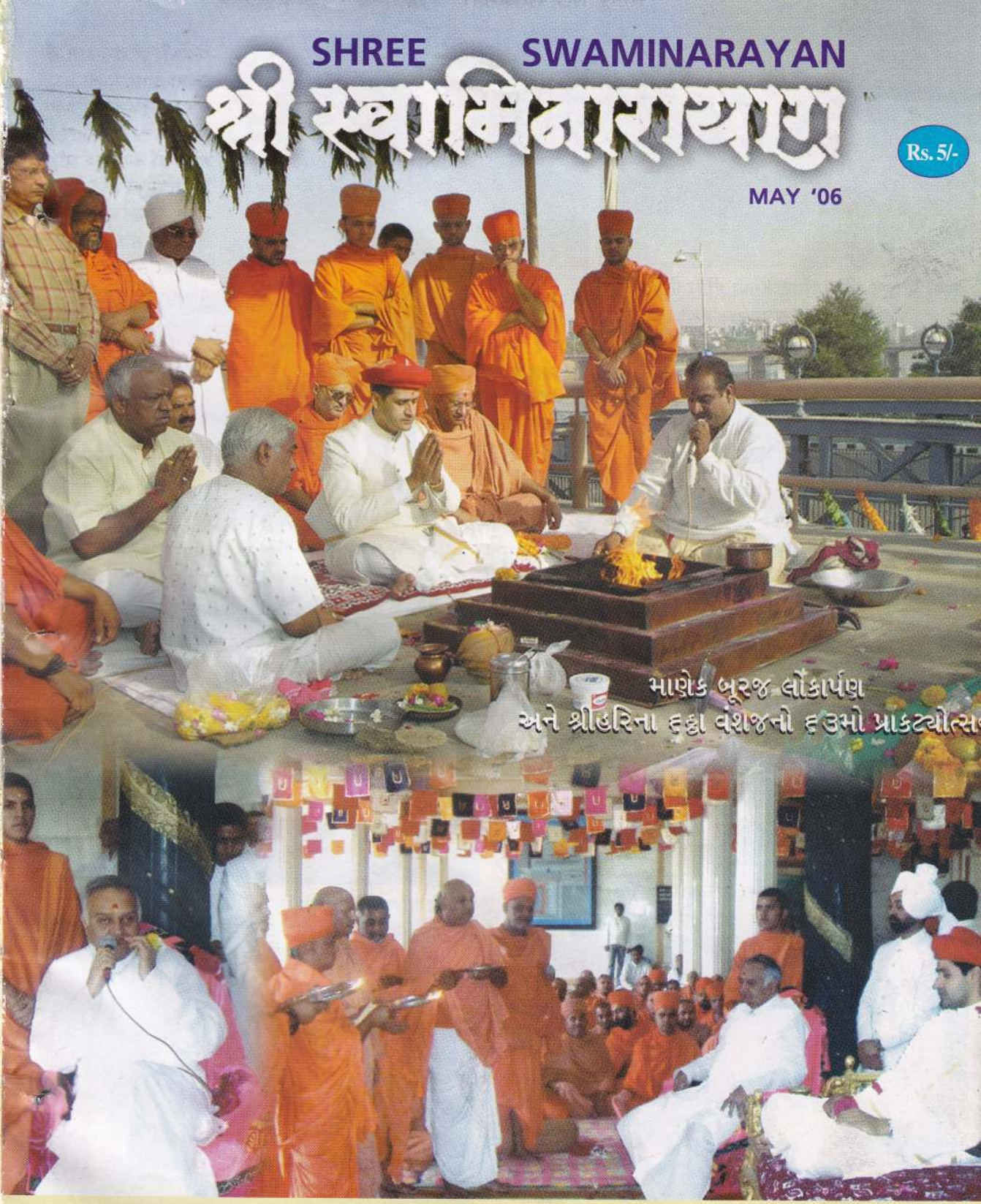
SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

MAY '06



Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



सुरत रामपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में आरती उतारते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



सर्वोपरि श्रीहरि जैसा ही उनका अपर स्वरूप प.पू. बडे महाराजश्री के लिए संप्रदाय के दोनो देश के हरिभक्तों को खूब महिमा है । जो सुरत शहर के २०० मकान में पदार्पण के दौरान रोड पर फूल डालकर स्वागत करते है ।



प.भ. नंदुभाई पटेल के लिए यह अवसर उनके जीवन को उज्जवल तथा धन्य बना दिया । अनेक जन्मो के पुण्य से यह सुख मिलता है ।



प.भ. नंदुभाई पटेल (मोटपवाले) यहाँ विदाई के अवसर पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



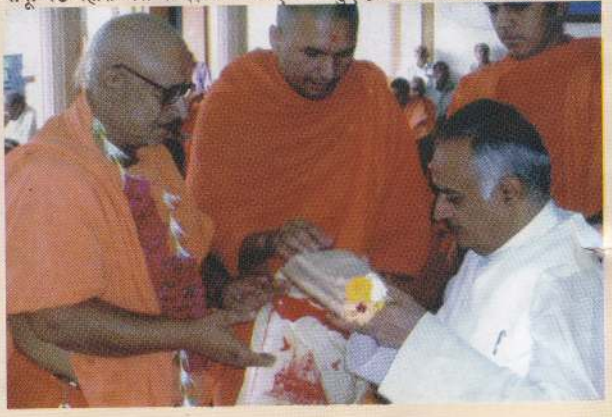
प.भ. भगवानजीभाई परमार (अंबाणा-हालार) प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे है ।



प.पू. बडे महाराजश्री के दर्शन के लिए पधारे हुए हरिभक्तों की विशाल सभा ।



कांकरिया मंदिर में मासति यज्ञ करते हुए प.प. बडे महाराजश्री ।



प.पू. बडे महाराजश्री को प्रसादी की चीजे अर्पण करते हुए हरिसेवक स्वामी ।

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ मई -२००६



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	इष्टदेव के नाम से विना विचार के दान करना चाहिए	४
४.	मनुष्य के जन्म का हेतु	६
५.	मूर्ति	७
६.	सुख के सागर श्रीहरि	९
७.	महुन्द्रा में महाराजश्री के मुकुट में घनश्याम महाराज का दर्शन	१०
८.	सत्संग सुरभि : आपने बहुत अच्छी सलाह दिया	११
९.	सत्संग बालवाटिका	१३
	(१) भगवान भाग्य को बदल देते है	
	(२) निष्ठा प्रभु के नाम की	
९.	प्रश्नपेटी	१६
१०.	भक्तिसुधा	१७
	(१) मोहन की चाहना हो तो मान का त्याग करो	
	(२) सभी लोग खीचडी की दातून किये	
	(३) नीच सेवा में भाग्य मानना	
	(४) प्रान्तीज की लक्ष्मीबाई	
११.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

जीव मात्र को मोक्ष की इच्छा है । परन्तु उस तरफ गति करने की इच्छा नहीं है । यदि मुमुक्षु हर तरीके से प्रवृत्त हो जाय तो उसे अवश्य ईश्वर की प्राप्ति होगी और इसीसे उसका आत्यन्तिक कल्याण संभव है । लेकिन मनुष्य जैसे जागतिक विषयों के प्रति रात-दिन, जाग्रत स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं में एकही रटन करता है - मैं और मेरा जो कभी होना संभव नहीं है । फिर भी उसी की रटन करता रहता है । जिस कारण उसी में बंधता जाता है । ऐसी रटन यदि परमेश्वर की करने लगे तो जन्म मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाय और मोक्ष की प्राप्ति हो जाय । अन्यथा बालुका से तेल निकालने वाली बात है । जीव का मोक्ष परमात्मा की कृपा के विना संभव नहीं है । जगत के पंडित, गुरु, साधु महात्मा, बड़े-बड़े विद्वान वक्ता, सभी अपनी भावना को पुष्ट करने के लिए गुरु के माहात्म्य को समझाकर भोले मनुष्यो को वश में करने के लिए अधिक से अधिक शिष्य बनाने में पडे हुए हैं । उन्हें दूसरे के मोक्ष से कोई मतलब नहीं है, वे इसे लक्ष्य ही नहीं मानते । इसलिये तो सर्वोपरि भगवान श्रीहरि जीव के ऊपर अपार कृपा करके मनुष्य शरीर धारण करके एक ही वात कहें है कि गुरु वहीं है जो जीव को भगवान से भेट करा सके । केवल अपने में जोडने के लिए तो लाखों गुरु बन जायेंगे लेकिन भगवान में जोडने वाले तो मात्र भगवान स्वामिनारायण ही हैं । इनकी शरण में जीव यदि शरणागति स्वीकार करले तो उसका आत्यंतिक मोक्ष निश्चित हैं ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अप्रैल -२००६

२. नवावाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्व प्रसंग पर पदार्पण.

५-६. माधापर (कच्छ) पदार्पण ।

७. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीहरि जयंती रामनवमी के दिन बालस्वस्प घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक तथा रात्रि में १०-१० प्राकट्य आरती उतारने हेतु पधारे ।
प.भ. प्रवीणभाई बालकृष्ण उपाध्याय के यहाँ पदार्पण, बोपल ।

११. नवागाँव (जेतलपुर देश) श्री स्वामिनारयण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर तथा वहाँ के हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. जे. जे. पटेल (पी.आई.) के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।

१२. से १५. केरा (कच्छ) तथा मांडवी (कच्छ) कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१६. प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ६३ वें जन्मदिन उत्सव को अपनी उपस्थिति में सम्पन्न किये ।
प.भ. कांतिलाल मोहनलाल पटेल के यहाँ पदार्पण-मेमनगर ।
गुजरात की प्राण समान सरदार सरोवर डेम प्रोजेक्ट का कार्य बन्द होने से उसकोपुनः प्रारम्भ किया जाय इस हेतु से गुजरात के मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी ५१घन्टे के लिए उपवास पर उतरे उन्हे बल मिले इस कार्य में अंतः प्रेरणास्प बने और कार्य पुनः तीव्रगति से प्रारम्भ हो इस लिए मुख्यमंत्री के साथ गुजरात युनि. ग्राउन्ड में संत मंडल के साथ पधारे ।

१७. जुंडाल गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के सम्पूर्ण सहयोग से निर्माण प्राप्त तथा अहमबाद म्युनिसिपल कोर्पोरेशन द्वारा आयोजित माणेकबुरज लोकार्पण'' विधि अपने हाथों से सम्पन्न किये, एलिसब्रिज ।
अहमदाबाद मंदिर में पारायण की पूर्णाहुति स्व हाथों से किये ।

१९.-२०. बळदिया (कच्छ) पदार्पण ।

२१. पालडी (कांकज) (जेतलपुरदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्व हाथों से किये ।
कर्म शक्ति श्री स्वामिनारायण मंदिर के पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

२२.-२३. अंजार (कच्छ) सरदार नगर (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने बरद् हाथों से सम्पन किये ।

२४. श्री स्वामिनारायण नूतन मंदिर परढोल पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
रात्री में धूलकोट हालार पधारे ।

२५. उटबेट सामपर (हालार मूलिदेश) पदार्पण ।

२६. हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर ''मासतियज्ञ'' प्रसंग पर पदार्पण ।

२७.-२८. शिरोही (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदरि पदार्पण ।

२९. उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदार्पण ।

३०. प.भ. अशोकभाई हरिभाई गज्जर के यहां लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण साबरमती ।
प.भ. कल्पेशभाई नारायणभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, श्रेयस टेकरा ।
प.भ. कनुभाई डाह्याभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, हाथीजण ।
प.भ. हर्षदभाई झिंझुवाडीया के ''झिन्झुवाडिया ब्रदर्स ज्वेलर्स'' में पदार्पण, शिवरंजनी चार रस्ता ।

इष्टदेव के नाम से विना विचार के दान करना चाहिए

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

इस पृथ्वी पर जिस कीसी मनुष्य को कुछ भी पढने, सुनने देखने या अनुभव से स्वामिनारायण भगवान में प्रीति हुई हो ऐसे प्रत्येक मनुष्यों द्वारा स्वामिनारायण संप्रदाय का लेखा जोखा का अध्ययन अवश्य करना चाहिए । शास्त्रों के विषय में यथार्थ ज्ञान रखना आवश्यक है जब कभी शास्त्रों को खरीदना हो तो विवेक बुद्धि का अवश्य उपयोग करें । जैसे अहमदाबाद-वडताल के गादी संस्थान से जिसने दीक्षा प्राप्त नहीं की हो चाहे वह त्यागी हो या गृहस्थ उसे गादी संस्थान से जुड़ा नहीं कहा जा सकता । उसी प्रकार जिस पुस्तक के प्रकाशन में आचार्य महाराजश्री का आज्ञापत्र न हो उसे भी सम्प्रदाय का शास्त्र नहीं समझना चाहिए । क्यों कि मनगढन्त अर्थो का घटन करके वे पुस्तकें प्रकाशित होती है मूल तत्व उसमें नहीं रहता है । खंडनात्मक तत्व उस में रहता है । इस प्रकार की पुस्तकें आज धूम धाम से प्रकाशित की जा रही हैं । इसका ध्यान रखकर मूलभूत मंदिरो के सिवाय कहीं से पुस्तकें नहीं खरीदनी चाहिए ।

जब सिद्धान्त या लेखाजोखा की बात आती है तब प्रत्येक के मुख से एक ही बात निकलती है कि "भगवान तो एक ही है न ?" यह वात १००% प्रशितक सत्य है, तो भी यह विचारने योग्य है कि पुस्त्रोत्तम नारायण जो मार्ग बताये वह कहाँ है, यह विचारना इस लिये आवश्यक है कि भगवान ने अपने शास्त्रों में एक ही मार्ग जो धर्मकुल से जुडा है वही बताया है, न कि जो नाना प्रकार के अलगाव वादी भेद कालान्तर में हुए उनसे । स्वामिनारायण नाम से कोई मंदिर बनाता है, संस्था बनाता है फिर उसी मंदिर या संस्था में जो मूर्तियां प्रतिष्ठित होती है वे गादी की परंपरा के आचार्य द्वारा प्रतिष्ठित नहीं होती तो उसमें परमात्मा विराजमान नहीं होते । इसलिये शिक्षापत्री श्लोक नं. ६२ का चिन्तन करना बहुत आवश्यक है । इस प्रकार परंपरा तो एक ही है जो धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा उन्ही से संत दीक्षा तथा गृहस्थों को सत्संग की दीक्षा दी जाय । अब तो संप्रदाय के नियम से विरुद्ध कोई मंदिर करे, भगवा वस्त्र पहनले, कंठी, तिलक-चन्दन धारण करले तो उसे क्या स्वामिनारायण संप्रदाय का कहा जायेगा ? "स्वामिनारायण संप्रदाय अर्थात् स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित परंपरा । चिन्ह सभी के एक जैसे भले हो, परंतु परंपरा न हो तो उसे आभासी धर्म कहा जायेगा । अथवा कल्पित धर्म कहा जायेगा । महाराज ने शि.प. श्लो. २४ में लिखा है कि हमारे सत्संगी कल्पित धर्म का आचारण न करें ।

अब प्रश्न यह है कि यह कल्पित अलग हुए मार्ग को पोषण कहाँ से मिल रहा है । विचार करने पर ख्याल आयेगा कि पोषण का मूल सिद्धान्त तथा नीति नियम समझे विना जो लोग दान करते है, वही कारण है । अयोग्य दान से आभासी संस्थाओं की दीवारों को पोषण मिलता है । कैसे ? जैसे एक हरिभक्त है नीति नियम निष्ठा, श्रीजी महाराज का वचन हृदय में दृढ न हुआ हो तो मकर संक्राति का पर्व आये, परम्परा विरुद्ध की संस्थाओं में से, दान लेने के लिए त्यागी का गृहस्थ घर पर आयां, उस गृहस्थ यजमान को होता हैं कि घर मांगने के लिए याचक को खाली हाथ कैसे वापस करें ? इसलिए १००/५० रुपये दे ही देता है । आने वाला व्यक्ति इस दान को उस आभासी संस्था में लेजाकर जमा करा देंगा । अथवा उसमें से दूसरी कोई संस्था खडी होगी । अलग संस्था होगी तो उसका संचालन बलवत्तर बनेगा । दूसरी संस्था खड़ी होगी तो वह सायद श्रीजी महाराज संस्थापित देव की संस्था नहीं होगी, या धर्मवंशी आचार्य महाजश्री उस संस्था के मुख्य व्यवस्थापक न हों, हां इतना अवश्य की अलग हुई उस संस्था के दीवाल में उस हरिभक्त के दान को पैसे का उपयोग ईटो के लिए हुआ हो । वह संस्था स्थायी

रहेगी । हजारों मनुष्यों को स्वामिनारायण संप्रदाय की परंपरा को समझने में यह संस्था सायद अवरोधक बनेगी । लोग कहेंगे कि स्वामिनारायण सम्प्रदाय के कितने पंथ (विभाग) हो गये हैं ? ५०/- रुपये का दान करने वाला अपने इष्टदेव की सेवा की या द्रोह किया ? विश्व में स्वामिनारायण संप्रदाय की दो गद्दी है । इसके अलांवा जो भी है उसे आभासी समझना चाहिए । अहमदाबाद तथा वडताल इन दोनो गादी संस्थानों को श्रीजी महाराज ने स्वयं प्रतिष्ठित किया हैं । इसके जो आचार्य है वे श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप हैं । स्वयं श्रीजी महाराज जिस गादी पर विराजमान होकर गादी से सम्बन्धित मंदिर की देखरेख करते हैं । इतना ही नहीं त्यागी-गृहस्थ भी आपकी दृष्टि से परे नहीं रहते । ऐसी परम्परा में किया गया दान ही सार्थक है अन्यत्र आभासी जैसी संस्थाओं में किया गया दान सम्प्रदाय को तोडने जैसा काम है । कोई मनुष्य अपने इष्टदेवका द्रोह न करे, परंतु इस प्रकार करने से अपने इष्टदेव का द्रोह तो होता ही है । इसीलिये दान के विषय में यदा कदा स्वामिनारायण मासिक पत्रिका में सभी सत्संगियो को सूचना दी जाती है कि "सत्संगियों को कहाँ दान देना चाहिए । यदि सत्संगी सतर्क नहीं होगे तो अयोग्य स्थान में यह दान का प्रवाह वह जायेगा । इसलिए दाताओं को सूचन है कि दान के लिये योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा प्राप्त करके ही दान दें ।

इसके अलांवा भगवान की आज्ञा है कि मंदिर जो मूल पीठ स्थान है वहीं पर दशांश या वीशांस का दान अपने सामर्थ्य अनुसार करें, यदि ऐसा नहीं करेंगे । तो वे गृहस्थ चोर कहलायेगें क्योंकि वह द्रव्य घर में ही है जो गृहस्थ उपयोग करते है, ऐसा धन आप अपने लिये उपयोग करेंगे तो आपका वह द्रव्य डॉक्टर-वकील चोर लेजायेगा या तो कुमार्ग में चला जायेगा । यह सभी सत्संगी अवश्य ध्यान देकर अपने धन का भाग परमात्मा को अवश्य अर्पित करें, यह उनका धर्म है जिसके लिये बार बार सूचना करनी पडती है कि वे अपनां दशांश वीशांश नरनारायणदेव के आफीस में अवश्य जमा करें । शिक्ष संस्था, गुरुकुल या मंदिर का निर्माण होता हो तो ऐसे स्थान में दान करना हो तो भगवत् निमित्त के दान को काट कर देना उचित नहीं है ।

आज विमुख संस्थायें स्वामिनारायण केनाम से गृहस्थों के घर भिन्न-भिन्न उपक्रम के माध्यम से दान लेने पहुंच जाती हैं । तो क्या ऐसी संस्थायें मूल संस्थान का मूलोच्छेद नहीं कर रही हैं ? जिस स्वामिनारायण नाम को लेने मात्र से पापजल जाता है, उस परमात्मा को विमुख लोग मात्र बदनाम ही कर रहे हैं । जगत को यह पता नही है कि क्या सही है और क्या झूठा है । ऐसी स्थिति में निष्ठावाले हरिभक्तों को चाहिए कि देव तथा आचार्य की परम्परा को अपने बालकों से बतायें जिससे वे यथार्थ स्थिति को समझ सकें, धूर्तो से जागरुक बनें । निवृत्त प.पू. आचार्य महाराजश्री की उक्ति लोगों के गले उतर जाय तो समझाने की जरुरत ही नहीं है । उक्ति यह है - "जनून वाळा ना सत्संग बहु शोभे छे ।

सौ बात की एक वात जिसे स्वामिनारायण भगवान में प्रीति हो वे वचनामृत प्र. ११ का अवश्य विचार करें । श्रीजी महाराज से सच्चिदानंद स्वामीने प्रश्न किया "भगवान के विषय में जिसे प्रेम हो उसे कैसे पहचान सकते हैं ? श्रीजी महाराज ने कहा कि "जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण मथुरा जाने के लिए तैयार हुए उस समय गोपियों ने अपने घर परिवार की लाज छोड़कर भगवान में एक निष्ठा रखकर साथ चलने को तैयार होती है, उनके मार्ग को रोकती है, लेकिन जब भगवान की दृष्टि पडती है तो वे रास्ता छोड़ देती हैं और मात्र उनकी झांकी को अन्तर में उतारकर वापस आती हैं । ऐसी भावना एक निष्ठा भक्ति की रखेंगे तो हमारा भी कल्याण होगा । अन्यथा भगवान की दृष्टि से दूर हो जायेगें । भगवान के अनुकूल रहने में जीवन सुखी बनेगा । भगवान मथुरा

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १२

मनुष्य के जन्म का हेतु

- पार्षद घनश्याम भगत गुरु जगतप्रकाशदासजी (धोलका)

पंच विषय से विराम लेकर प्रभु में जुड जाना ही मनुष्य के जन्म का हेतु है। हम जो जन्म मरण का खेल खेल रहे है वह पंच विषय के नाते ही है, पंच विषय जीव पर दया करे ऐसा नही है, उसका दाव आते ही वह गला दबा देगा, शास्त्र में लिखा है चौरासी लाख योनी के बाद यह मनुष्य जन्म मिलता है। और लोग कहते भी है कि लोगो को पता है लेकिन तो भी नही समझते मनुष्य जब से जन्मलेता है तबसे वह, आहार, निद्रा भय मैथुन, मे जीवन खत्म कर देता है प्रति आदमी यही सोचता है कि यह काम खत्म करके और कुछ नही करना है लेकिन काम खत्म नही होता एक खत्म होता है तो दो नये आते है १२ महिने का वर्ष होता है अधिक मास आता है। तो भी काम खत्म नही होता जिन्दगी के ६० साल कैसे खत्म होते है।

५ वर्ष बालपन में
१० वर्ष पढाई में
३ वर्ष खेल में
१० वर्ष नोकरी में
१३ वर्ष नीद में
३ वर्ष स्नान में
२ वर्ष खरीदी में
४ वर्ष बीमारी में
५ वर्ष व्यवहार और सेवा में
५ वर्ष लेनी देनी में

इसी तरह मनुष्य एक अमूल्य जीवन को अपने ही हाथो से खो देता है। पीछे खोई हुइ जिन्दगी कभी नही मिलती जब काल आयेगा तब वह यह नही सोचेगा कि यह बडे खानदान का अमुक व्यक्ति है। वह यह नही सोचेगा कि यह बहुत पढा लिखा है वह यह नही सुनेगा की मेरी हाईकोर्ट में तारीख है। वह तो जैसे कोई आदमी खेत से काकडी तोडले और चला जाय उसी भांति काल इस जीवआत्मा को लेकर चला जायेगा मनुष्य को टहलना घूमना अच्छा लगता है पर भजन भक्ति करना अच्छा नही लगता, जैसे जिसका स्वास्थ अच्छा होता है तो उसको भोजन अच्छा लगता है और जिसका स्वास्थ अच्छा नही होता उसको भोजन का स्वाद अच्छा नही लगता इसी तरह जिसका पूर्व जन्म का पाप आगे आकर खडा हो जाता है मात्र वही भगवान को नही प्राप्त कर पाता, तुलसीदासजी ने कहा है।

तुलसी पूर्व के पाप से हरि कृपा न सोहात।
जैसे ज्वर के जोर से भोजन की स्वी न जात॥

पर हम सबका तो बहुत पुण्य है, क्योंकि जिसके कान में स्वामिनारायण महामंत्र गूंज गया है जिसने आचार्य महाराजश्री के दर्शन किये है जिसने इन मंदिरो का दर्शन किये है, जिसने इन संतो के दर्शन किये है उनके तो अहो भाग्य है उनके भाग्य की क्या बडाई करे क्योकि रामचन्द्र परमहंसजी कहते मगर कोई आदमी पत्र लिख रहा हो और लिखते लिखते सो जाये पर जब जागेगा तब वह वही से सुरुकरेगा जहाँ कलम स्की थी इसी भांती पूर्व जन्म के कर्म जैसा फल मिलता है, बहुत लोग वैसे को ही जिन्दगी समझ बैठते है पर वास्तविकता यह नही है वास्तविकता यह कि आप इतिहास उठाये और उसका सर्वे कीजिये उसका जवाब होगा कि हरिभक्त गरीब होते है पर वास्तव में वही धनवान भी होते है क्योंकि उनके पास भगवान होते है और भगवान से बडा कुछ नहीं है। यह जीवन मात्र प्यारे प्यारे घनश्याम महाराज को खुश करने के लिये है। धर्म कुल आचार्य महाराजश्री के प्रति वफादार बनकर सेवा करने के लिए है देव के प्रतिश्रद्धा रखकर भक्ति करने के लिए है। यह समय भगवान को खुश करने के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि पहले के समय यात्रा करने मे बहुत परेशानी होती थी। आज जहाँ जाना चाहे वहाँ जा सकते हैं पहले कथा सुनने के लिए वक्ता के पास बैठना पडता था आज अगर कोई कारण बस नही पहुचते तो भी कोई परेशानी नही है आज उसका आनन्द ले सकते है आज हमारे लिए ओडियो, विडीयो, एम.पी.-३ उपलब्ध है, पहले के समय में जहाँ नही जा सकते थे उसके बारे में सोचना भी मुश्किल था आज कैमरे के जरिये तस्वीर ले सकते है और उन मूर्तियो का दर्शन कर सकते हैं। आज के समय में आत्यंतिक कल्याण लेना बहुत सरल हो गया है आज हमारे लिये इतने अच्छे देव, आचार्य महाराजश्री, मंदिर, संत हरिभक्त एवं शास्त्र में श्रीहरि

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ८

मूर्ति

- साधु घनश्यामप्रकाशदास
(महंतश्री नारायणघाट)

भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रगट होने के २२५ वर्ष पूर्ण हो गये। सर्वोपरि सर्व अवतारों के अवतारी श्रीहरि इस पृथ्वी पर ४९ वर्ष दो मास १ दिन रहे। स्वयं अपनी मूर्ति वडताल, मूली, धोलका आदि मंदिरो में प्रतिष्ठित करके यावत्चन्द्र दिवाकरौ उसमें विद्यमान रहने के लिए कहा। भौतिक संसार को नाशवंत बताकर देहका त्याग किया लेकिन अपनी मूर्ति की दिव्यता तथा अलौकिकता का यथार्थ ज्ञान स्वयं सभी को कराये। जिसका प्रभाव अंग्रेज सरकार पर भी पडा परिणाम स्वस्म अंग्रेजो ने अपनी पुस्तक में महाराज के स्वस्म को टंकित कर दिया। महाराज के दर्शन से लोगों में समाधि लग जाती थी। यदि कोई दर्शन न करके आंख बन्द कर लेता तो उसके अंत:करण में भगवान के पादुका के मधुर ध्वनि की झंकार उठती रहती थी। किसी कीसी को पादुका की आवाज के सुनते ही उसके इष्टदेव चाहे वह पैंगम्बर ही क्यों न हो उनका दर्शन होता। जिस महाप्रभु की मूर्ति में से २४ अवतार हुए और उन्हीं में वे विलीन भी हुए ऐसा दिखाई देता था। यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि इन अष्टांग योगों को सहजानन्द स्वामीने ज्ञानी अज्ञानी इतना ही नहीं जीव प्राणी मात्र को अष्टांग योग सिद्धि के विना भी समाधि कराया था। स्वयं कहे भी कि हम मूर्ति द्वारा, आचार्य द्वारा, संत द्वारा, शास्त्र द्वारा प्रगट रहेंगे। अपनी शरीर परित्याग के समय योग कला प्रवर्तक श्रीहरिने जिसे अपनी देह का त्याग बताया ऐसे दादाखाचर जब श्रीहरि का अग्नि संस्कार देख रहे थे उस समय प्रेमवश होकर दादा खाचर उस चिता में गिरने जा रहे थे उसी समय गोपालानंद स्वामी ने उनका हाथ पकड कर कहा दादा खाचर इस समय आप महराज की बैठक में दर्शन करने जाइए। वहाँ दर्शन करने गये तो देखा कि जिस प्रभु का अग्नि संस्कार हो रहा है वे ही गुलाब का हार लेकर खड़े हैं। प्रभु ने कहा दादा मैं चला गया हूँ ऐसा मान लिये ? ऐसा कहकर दादा के गले में गुलाब का हार प्रभुने पहना दिया। आजभी वह गुलाब का हार प्रभु के प्रत्यक्षत्व का द्योतक है। श्रीहरि की मूर्ति सत्यसंकल्प है।

श्रीहरि की मूर्ति का वर्णन करते हुए प्रेमानंद स्वामी महाराज की दाढी में एक तिल का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सभी संत हरिभक्त भगवान से क्यां मांगे ? पैसा, स्मया, सोना, हीरा, बंगला, गाडी, लड़का, लडकी यह सब कुछ भी नहीं बल्कि

तमारी मूर्ति विना मारा नाथ रे,
बीजु मने आपसो मां .....

जगदीशानन्द ब्रह्मचारीने भी ऐसा ही मांगा ?

अहर्निश दर्शन देजो रे, मूर्ति चैतन्य
मां रहेजो,
नाथ तमारी मूर्तिमां रहेजो वृत्ति मारी
रे चैतन्य मां रहेजो।
पांचसौ परमहंस तथा २० लाख
हरिभक्तों ने महाराज की उपस्थिति में
यही मांगा था।
शोभा सागर श्याम तमारी मूर्ति
प्यारी रे।
मूर्ति प्यारी रे नाखूं मारा प्राण वारी
रे॥

सुख सुविधा, रमणीय संसार बाग बगीचा लड़का-लड़की, मा-बाप सब आँख से क्या देखते हैं ? संत कहते हैं -

तारी मूर्ति रे देजो नेणुं नो शणगार।
मने प्यारी लागे मूर्ति तमारी
घनश्याम..... प्यारी लागे
तारा मुखनी लावणता मीठी रे मोहन
वनमाली,
एवी त्रिभुवनमां नव दीढी रे मूर्ति
मरमाली... प्यारी लागे

नियम-चेष्टा के पद बोलते हुए मूर्ति का स्मरण करते हुए श्रीहरि की आज्ञा का पालन करके हजारों हरिभक्त-संत श्रीहरिकी मूर्ति का चिंतवन करके समाधि का सुख प्राप्त करते हैं। आज भी यही स्थिति हैं -

आओ मारा मोहन मीढडा लाले के
जोऊं तारी मूर्ति रे लोल....
व्हाला मारी सुध-बुध हरि लीधी रे...
लगे लटके वेरागण कीधी रे.....

गुजराती साहित्य के सर्व प्रथम गद्यग्रन्थ में साहित्यकार जिस ग्रन्थ की प्रसंशा करते है वह वचनामृत आज भी सर्व श्रेष्ठता की शिखर पर सुशोभित है। अमेरिका जैसे देश भी वचनामृत ग्रन्थ की सर्वोपरिता का

प्रमाण पत्र दे दिया है । हिन्दू ग्रन्थों में श्रेष्ठ ग्रन्थ वचनामृत हैं । जिस वचनामृत में तिथि तारीख, वर्ष, स्थान, संत हरिभक्तों के नाम भी निर्दिष्ट है ऐसे वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि जैसे चिन्तामणी किसी पुरुष के हाथ में हो वह जिस पदार्थ की अपेक्षा रखता है उसे वह प्राप्त कर लेता है, ऐसे ही भगवान की मूर्ति में भी वैही तत्व है, जो मूर्ति में अखंडवृत्ति करता है वह जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्मलोक, आदि भगवान के धाम को देख सकता है - फिर इस लौकिक पदार्थो की क्या बात ?

जन्म-मरण, गर्भवास तथा चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त होना है । श्रीहरि के सांनिध्य में श्रीहरि की मूर्ति का अखंड चिंतवन करते जो भगवत् भजन या भक्ति करता है वही श्रेष्ठ भक्त है, एकमात्र यही साध्य है । श्रीहरि वचनामृत ग.म. ११ वे में कहते है कि जो भगवान को मध्य में रखकर सभी क्रिया करते हैं, उनकी सभी क्रिया यें भक्तिरुप हो जाती हैं ।

पृष्ठ ६ से आगे

मनुष्य के जन्म का हेतु

अखंड बिराजमान रहते है, अनंतकोटी ब्रह्मांड के राजाधिराज, सर्व करता हर्ता, सर्व कारण के कारण, अत्र, तत्र, सर्वत्र, व्याप्त हुए सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण प्रभु को खुश करके प्रभु के चरण कमल में स्थान मिल सकता है । और विशेष मे बताना चाहूँगा कि घनश्याम महाप्रभु की प्रागट्य भूमी छपैया धाम का दर्शन प्रत्येक हरिभक्त के जीवन का एक अमूल्य रत्न छपैया कि पावन धरती जहाँ का दर्शन करने के लिए देवता को भी अनुमती लेनी पडती है । जहाँ पूर्व में बडे बडे मुनिओने तपस्या कि है जहाँ की धरती नैमिशारण्य तीर्थ से अधिक पुण्यशाली जहाँ श्रीहरि जन्म लिये है वहाँ कोई कामी बैठे तो निष्कामी हो जाये । कोई लोभी बैढे, निरलोभी हो जाये मानी बैठे तो निरमानी हो जाय, जहाँ क्रोधी अपना स्वभाव छोडदे जहाँ प्रत्येक जीव आत्मा को शांति मिले ऐसी पावन धरती पर पूज्य आचार्य महाराजश्री के अथक परिश्रम से संतो हरिभक्तो के परिश्रम से अलग अलग महोत्सव का आयोजन किया जाता है जिसमें सहजानंदी सिंह भाग लेते हैं एवं अन्य हरिभक्तों के लिए युवा शिबिर का आयोजन किया जाता है आगामी शुभ दिपावली के अवसर पर उत्सव का आयोजन किया जायेगा जिसमें आप पधारकर दिव्य लाभ ले सकते हैं । भगवान स्वामिनारायण कहते थे कि इस महोत्सव का मात्र यह हेतु हैं कि अगर अंत समय में श्रीहरि की एक भी दास्तान याद आ जाये तो इस जीव आत्मा का बेडा पार हो जाये, इसी को लक्ष्य में रखते हुए इस अमूल्य अवसर को न चुके ।

सत्संगी मात्र को दान भेंट नियमित भरने के संदर्भ में

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने सप्रदाय को अमूल्य ग्रन्थ शिक्षापत्री श्लो. १४७ के अनुसार आज्ञा की है कि प्रत्येक आश्रित जन अपने आवक का दशवां भाग या जो कमजोर हों वे हरिभक्त वीसवां भाग दान भेंट निकाल कर अपने जीवन का व्यवहार करें । जो हरिभक्त जिस देश में रहते हों वे उसी देश के मंदिर में दान भेंट को देकर रसीद प्राप्त करले, इसके साथ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का नाम लिखा कर भेंट के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की कोठार ओफिस में भर कर पहुंच अवश्य प्राप्त करले ।

विशेष सूचना : श्रीजी महाराज की आज्ञा अनुसार प्रत्येक हरिभक्त दान भेंट की धनराशी अन्यत्र किसी भी संस्था में न दे, इसका ध्यान रखें ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है ।

सुख के सागर श्रीहरि

- स्वा. भक्तवत्सलदास (तपोवन मंदिर लीबडी)

साखी

सुरपुर नटपुर नागपुर
ए तीन में सुख नांहि ।
को सुख हरि के चरन में
को संतन के मांहि ॥

जिसे महल तथा जेल एक जैसा लगताहै , कंचन तथा मिट्टी में अंतर नहीं है, स्त्री-पुरुष में आकार भेद नहीं है वही सच्चा स्थित प्रज्ञ है । अथवा योगी है । ऐसे संत योगी का सभी जगह समानता का अनुभव होता है । ऐसे महात्माओं के जीवन में समदृष्टि होती है । कभी विछाने के लिए अच्छा गद्दा होता है तो उसका आनन्द नहीं होता तो कभी जंगल में वृक्ष केनीचे हाथ की तकिया लगाने के लिए हो तो उसका दुःख भी नहीं होता है । ऐसे संत पुरुष के पास जिसने साम्यावस्था प्राप्त कर लिया है सदा सुख-दुःख से भिन्न कुछ और ही आनन्द की अनुभूति होती रहती है ।

सद्गुरु सेवो रे साचा शुद्ध भावशुं रे

ऐसे स्थित प्रज्ञ महात्माओं के पास परिवार नहीं, पत्नी नहीं पैसा या पुत्र नहीं फिर भी उनका जीवन सदा पूर्ण काम तथा आत्माराम होता है । वे सदा आत्मानंद में मस्त रहते हैं । जब कि संसारी लोग व्यवहार के सभी साधन होते हुए भी रात्रि में नींद नहीं आती, नींद के लिये गोली लेनी पडती है । कितने भोग के विषयी लोग तो इतनी विषय भोगते हैं कि उन्हें ओक्सिजन पर रखना पड़ता है । सच्चे सुख तथा शांति का मूल कोई शहर या महल नहीं है, कोई संपत्ति नहीं है, कोई संतति नहीं है, कोई संबन्ध भी नहीं है, यदि है तो भगवान श्रीहरि या संतो की शरणागति में है । आत्मा तथा परमात्मा के यथार्थज्ञान से अज्ञान, अन्धकार, दुःख यह सब दूर होना संभव है । ज्ञानी पुरुष को दुःख में भी सुख-शांति दिखाई देगी । असंतोष भी नष्ट हो जायेगा । आशाएं भी निर्मूल हो जायेंगी । मन प्रभु के चरण का चाहक हो जायेगा । अज्ञानता के कारण ही दृष्टि भ्रम हुआ है । वह सद्गुरुओं के शरणागति से, ज्ञान के अनुभव से सदा दुःख में भी आनन्दानन्द हीं अनुभूत होता रहेगा ।

जिसकी संपत्ति लुट गयी थी ऐसे वसुदेवजी एवं देवकी जी को जो आनन्द मथुरा के जेल मे मिल रहा था वह आनंद कंस के महल में होते हुए भी नहीं मिला भगवान श्री रामचन्द्रजी को राज्य की जगह वनवास मिला । अयोध्या एवं राजमहल छोडकर वन पथ के राही वने । राजपरिधान परित्याग कर वल्कल वस्त्र धारण किये नगर वासियों का सहवास छोडकर वन्य प्राणियों का सहवास मिला । फिर भी श्री रामचंन्द्रजी को वनमें घासफूस से वनी झोपड़ी में जो आनन्द मिला वह रावण के महल में रहने पर भी नहीं मिला । अपने श्रीहरि को जो आनन्द भक्ति-धर्म के गोंद में मिलता था वह जंगल में योगिराज गोपालानंद की गोंद में मिल रहा था । महात्मा गांधीजी को जो आनंद घर में मिल रहा था वही आनन्द साबरमती की जेल में मिल रहा था । वे जेल को भी महल मानते थे ।

प्रिय भक्तजन ! सभी सुख के सागर भगवान श्री हरि हैं । परमात्मा की इच्छा विना तथा उनकी शरणागति विना कहीं सुख शांति नहीं है । उनकी इच्छा के विना जगत में एक पत्ता भी नहीं हिल सकता है । हम प्रतिदिन नित्य नियम में गाते हैं कि -

मारी मरजी विना रे कोई थी तरणुं
न तोडाय ।

भगवान की इच्छा में तथा उन्हीं की शरणागति में सभी सुख समाया हुआ है । सभी कर्मो के फलदाता भोक्ता सब कुछ भगवान है, ऐसे प्रभु के चरण की शरण क्यों न ग्रहण करें या संत की शरणागति भी शांति प्रदान करने में कारण रुप हैं ।

महुन्द्रा में महाराजश्री के मुकुट में घनश्याम महाराज का दर्शन

- शा. स्वा. हरिजीवनदासजी (महुन्द्रा)

श्रीजी महाराज इस सत्संग में सदा प्रत्यक्ष विराजते हैं । भगवान को प्रत्यक्ष देखना हो तो श्रद्धा भी प्रत्यक्ष होनी चाहिए, दृढ होनी चाहिए ।

परंतु मनुष्य को जितनी श्रद्धा अपने पुत्र परिवार में होती है इतनी भगवान में है कहाँ ? भगवान तो इस कलियुग में भी भक्त मनोरथ-पूरक हैं । विशेष तो श्रीहरि का तेज तथा दैवत श्रीहरि स्थापित गद्दी स्थानों के मंदिरों में जैसा देखने में मिलता है ऐसा अन्य मंदिरों में नहीं । प्राचीन मंदिरो के देवों का तेज-प्रताप तो ऐसा दिव्य है कि संप्रदाय के आश्रित न हों तो भी वे इस दिव्यता के रहस्य को स्वीकार किये विना नहीं रहते ।

आजकल जिसे जो बोलना हो वह बोले, लेकिन श्रीजी महाराज ने तो अपने प्रत्यक्षत्व का प्रमाण दे दिया है । वह भी ऐसे गाँव में जहाँ स्वामिनारायण भगवान को कोई जानता ही नहीं है । जहाँ सत्संगी के दो ही घर हैं । उसमें भी वे आर्थिक दृष्टि से बहुत कमजोर हैं । गांधीनगर जिला का महुन्द्रा गाँव चीलोडा प्रातींज के हाईवे पर आया हुआ है । यहाँ सत्संग का प्रभाव कम होने से मंदिर बनाना बड़ा ही कठिन, फिर भी प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा तथा आशीर्वाद लेकर शा. हरिकेसवदासजी के शिष्य सा. हरिजीवनदसाजीने इस गाँव में नरनारायणदेव देश विभाग का मंदिर बनाने के लिए प्रयास किया ।

गाँव के मनुभाई माधाभाई पटेलने मंदिर बनाने हेतु अपनी जगह दे दी । लेकिन यह जगह ऐसी थी कि जहाँ गन्दगी - कचडा सडांध ही दुर्गन्ध मार रहा था । कोई उस तरफ मुख भी नहीं करता था । फिर भी मंदिर निर्माण कार्यारम्भ हो गया । जमीन को समतल करने के लिए एक किसान ने अपने ट्रैक्टर को लगादिया । स्थान एकदम समतल एवं शुद्ध हो गया । ऐसा करने से घनश्याम महाराज ने उसे परचा बताया । हुआ ऐसा कि एक खेत में जहाँ कुछ होता नहीं था परंतु सेवा का कार्य किया और भगवान की कृपा से खेत में खूब पाक हुआ ।

मंदिर का कार्यारम्भ हुआ । इस कार्य में कोई भूल से भी विरोध किया, रोडा डाला तो उसका नुकशान हुए विना रहा नहीं । मंदिर पूर्ण होने के साथ तीन मूर्तियाँ वहाँ चित्रार्चा के रूप में प्रतिष्ठित हुई । जिस में श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव प्रतिष्ठित हुए ।

जब मूर्तियों की प्रतिष्ठा की गयी तो एक गाँव का ओझा-सोखा (भूत प्रेत झाडनेवाला) उसने कहा कि स्वामिनारायण यदि सच्चे हों तो मुझे परचा बतावें, उस समय घनश्याम महाराज के ललाट से तेज निकलने लगा जिसे देखकर उस तांत्रिक ओझा ने यह मान लिया कि स्वामिनारायण भगवान सत्य हैं ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महुन्द्रा मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की ता. १८-११-०५ कार्तिक वद-३ को निश्चित की गयी । पांच दिन का यह उत्सव हुआ । एक व्यक्ति स्वामिनारायण भगवान को नहीं मानता था । लेकिन प्रतिष्ठा के तीन दिन पहले से स्वप्न में भगवान के तीनों स्वरूप दिखाई देने लगे थे । अभी मूर्तियों की सील खोली नहीं गयी थी बन्द ही थी लेकिन प्रभु की महिमा के कारण ही मूर्तियां का दर्शन उसे हुआ ।

प्रतिष्ठा के तीसरे दिन केवल १५ लीटर ही छाछ थी फिर भी प्रभु की प्रत्यक्षता का ही यह प्रमाण है कि १५ लीटर में ही ५०० भक्तों ने छाछ का स्वाद लिया और बची की बची रह गयी । एक भाई के स्कूटर में डेढ लीटर ही पेट्रोल था, उत्सव में स्कूटर खूब दौडाया लेकिन उत्सव के बाद भी स्कूटर में पेट्रोल जितना का उतना रहा । परिणाम स्वरूप यह भाई स्वामिनारायण भगवान को मानता नहीं था । अब मानने लगा ।

मूर्ति प्रतिष्ठा के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे, प्रतिष्ठा करके आरती उतारे बाद में पूर्णाहुति के समय अगल बगल संत खडे थे, उसी

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १५

सत्संग सुरभि :

आपने बहुत अच्छी सलाह दिया

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

१८८६ पौष शुद द्वितीया से महाराज ने स्वेच्छा से रोगी हो गये । प्रत्येक वस्तुओं से मन की वृत्ति को हटाने लगे थे । उदासीन रहने लगे थे। खाना पीना बन्द कर दिये । शरीर सूखने लगी थी । हरिभक्तों के मन में चिंता होने लगी थी । महाराज गढडा से कहीं जाते नहीं थे । केवल अक्षर दालान में आराम करते रहते । तीस संत दिन में तथा तीस संत रात्रि में खडे पग महाराज की सेवा में रहते । उसके अलावां भगुजी, मूलजी, सुराखाचर इत्यादि कितने हरिभक्त सेवा में हाजिर रहते थे ।

उस समय भारत में वायसरोय के स्थ में सरविलियम बेन्टिक की नियुक्ति हुई थी । बम्बई के गवर्नर के स्थ में सरजोन माल्कम थे । गवर्नर माल्कम काठिया वाड आने वाले थे । विशप हेबर तथा दूसरे अंग्रेज अधिकारी महाराज की महिमा को जान गये थे। जिससे वे महाराज से मिलना चाह रहे थे ।

माघ का महीना था शिशिर के मधुर ठन्डी के मौसम में श्री स्वामिनारायण भगवान को माल्कम मिलने के लिये बेचैन बना हुआ था। गवर्नर का मंत्री पत्र लिखकर सूचित किया कि गवर्नर आप से मिलना चाहते हैं ।

महाराज की तबियत ठीक नहीं थी जिससे माघ कृष्ण त्रयोदशी को पत्र लिखर सूचना दी गयी कि स्वास्थ्य अभी ठीक नहीं है अतः तुंत मिलना संभव नहीं है ।

गवर्नर का मंत्री सर थोमस विलियम्सने पत्र का उत्तर दिया कि आप का स्वास्थ्य जल्दी अच्छा हो जाय ऐसी हम कामना करते हैं ।

इधर फाल्गुन मास आ गया । काठियावाड के कामचलाउ पोलेटिकल एजेन्ट ब्लेन साहबने फाल्गुन शुक्ल द्वितीया के दिन (ता. २२ फरवरी १७३०) महाराज को पत्र लिखते हुए आमंत्रित किया ।

"गवर्नर साहब का काफिला काठियावाड ती करफ आ रहा था । उनकी इच्छा है कि राजकोट में यदि मिल सकें तो अच्छा होगा । आप आसकते हो तो सूचना देने की कृपा करेंगे ।"

महाराज ने पत्र पढा । गवर्नर साहब तथा ब्लेन साहब के मिलने की उत्कन्ठा का भाव महाराज जानकर प्रसन्न हुए । महाराज अपनी योग माया से स्वास्थ्य लाभ लेकर तैयार हो गये ।

पत्र वाहक द्वारा सूचना दे दिये कि मैं अवश्य मिलूंगा । तृतीया के दिन गढडा से संत हरिभक्तों के साथ संघ लेकर महाराज राजकोट के लिये निकल गये ।

सं. १८८६ फाल्गुन शुक्ल पंचमी (ता. २६ फरवरी १८३०) को प्रातः दीवान रोड पर पोलेटिकल एझन्ट के बंगले राजकोट में श्रीजी महाराज तथा गवर्नरश्री माल्कम की मुलाकात हुई । धर्म सत्ता एवं राजसत्ता का यह अनोखा मिलन था । गवर्नर तथा उनका मंत्री पोलेटिक एजन्ट तथा दूसरे अन्य अमलदार मिले । इस तरफ महाराज के साथ भी अयोध्याप्रसादजी, श्री रघुवीरजी, मुकुन्द ब्रह्मचारी, शुकानंद मुनि, मुक्तानंद स्वामी, सुरा खाचर, सोमलाखाचर, दादा खाचर, लाधा ठाकर, हीरजी ठक्कर, देवा भक्त तथा भीमभाई थे ।

गवर्नर की तरफ से लश्करी दल तथा सिपाही बंदूक द्वारा गोली की आवाज करके, फटाका फोड कर बैंड बाजा बजाते हुए श्रीजी महाराज तथा संतो हरिभक्तों का स्वागत किया था । गवर्नर साहब तथा उनके मंत्री महाराज के सामने आकर स्वागत किये । महाराज बंगला में पधारे उस समय गवर्नर हाथ मिलाकर श्रीहरि को अपने आसन पर बैठाया । बाद में पुष्पहार तथा शाल ओढाकर सम्मान किया । सुगन्धित अत्तर को छिड़ककर वातावरण को सुगन्धमय बना दिया।

बाद में गवर्नर स्वामिनारायण संप्रदाय के सिद्धान्त के विषय में पूछा । किसी प्रकार कोई तकलीफ तो नहीं है ऐसी जिज्ञासा करके पूछा ।

दूसरे देश से आया हुआ होने पर भी यद्यपि उसकी संस्कृति अपने देश से भिन्न है तथापि धर्मप्रवर्तक के साथ तथा संत हरिभक्तों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह ध्यान में रखकर ही उसने स्वागत किया ।

परदेशियों की ऐसी स्वागत पद्धति, देखकर महाराज खूब प्रसन्न हुए । महाराज ने कहा विशेष कोई तकलीफ नहीं है । आप गाय तथा ब्राह्मणों का रक्षण करोंगे तो बहुत काल तक राज्य करोंगे । गवर्नर माल्कम ने पूछा, "हमारी सरकार सती प्रथा तथा बालहत्या बन्द कराती है ।" इस विषय में आपका क्या विचार है ।

सती होना आत्महत्या के बराबर है । हमारा मत तो यह है कि तीर्थ के माहात्म्य को समझकर, पति के माहात्म्य को समझकर कभी सती होने के लिए आत्महत्या नहीं करनी चाहिए । स्त्री को सती होने का दबाव डालना भी हत्या जैसा है । पति के मरजाने पर भी परमेश्वर का भाव रखकर सेवा करना चाहिए । एक के प्रति दृढ विश्वास रखकर अपने भाई, पुत्र, पिता ससुर की आज्ञा में रहकर भगवान की भजन करना सती होने वाली की अपेक्षा श्रेष्ठ है । कारण यह कि आत्महत्या से जीव की अवगति होती है । बाल हत्या तो कभी नहीं करनी चाहिए । बालक तो भगवान के स्वरूप हैं ।

सतीप्रथा तथा बाल हत्या के विषय में महाराज के विचार जानकर गवर्नर खूब प्रसन्न हुआ ।

नारायण आप बहुत अच्छी सलाह दिये । इसके बाद माल्कम साहब धर्म के सिद्धान्त की पुस्तक मांगा और कहा "हमारा तथा हमारे शत्रु का अच्छा कीजिएगा ।

महाराजने आशीर्वाद दिया और शिक्षापत्री पुस्तक भेंट में दिया । दो घंटे तक कई विषयों पर चर्चा हुई । प्रत्येक पर महाराज एक दम स्पष्ट थे । महाराज की सिद्धान्तमयी वाणी सुनकर गवर्नर तथा मंत्री दोनो बहुत प्रभावित हुए । गवर्नर तथा अन्य अमलदार मस्तक से टोपी उतारकर महाराज को प्रणाम किये । उच्च स्थान पर विराजमान माल्कम की निर्मानी व्यवहार से श्रीहरि अत्यंत प्रसन्न हुए और मस्तक पर हाथ रखकर हार्दिक आशीर्वाद दिये ।

महाराज तथा उनके साथ संत-हरिभक्त को स्वयं गवर्नर तथा अमलदार दरवाजे तक विदाई देने आये । "आप हमें दर्शन देकर कृतार्थ किये इससे हमें बडी प्रसन्नता हुई है" गवर्नर माल्कम आभार व्यक्त करते हुए हाथ मिलाकर एकदूसरे से बिदा हुए ।

धर्मसत्ता तथा राजसत्ता का यह मिलन अंग्रेजी सरकार के लिए फलदायी बना । अमलदारों का महाराज के प्रति इस प्रकार का व्यवहार निष्कपटता का द्योतक था । इसीलिए महाराज भी आर्शीवाद देने में कोई कमी नहीं किये ।

गवर्नर माल्कम भी नारायण स्वामी की राजधर्म से युक्त सलाह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए और मन ही मन ऐसे अलौकिक महापुरुष का वन्दन कर रहे थे ।

पृष्ठ ५ से आगे इष्टदेव के नाम से विना विचार के दान करना चाहिए

चले गये तो भी गोपियां उन के विना जीवन जी न उनकी निष्ठा उनके जीवन का आधार बनी । जब भगवान कुरुक्षेत्र में गोपियों को बुलाये तभी उनका वे दर्शन कर सकीं । कभी भगवान के बचन का भंग नहीं किया । इसलिए जिसे भगवान में निष्ठा हो वे भगवान की आज्ञा का लोप नहीं करें । उनके अनुकूल आचारण ही प्रीति का लक्षम है ।

शास्त्र का ज्ञान न हो तो प.पू. महाराजश्री की आज्ञा के अनुसार ही वे जहाँ कहें वहाँ दान करना चाहिए । इसलिए प.पू. आचार्य महाराजश्री श्रीजी महाराज के अपर स्वरूप तथा उनके ही गद्दी पर विराजमान हैं । पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रन्थ में श्रीजी महाराज ने कहा है कि "हम उनमें है वे हम में है ऐसा स्त्री-पुरुष सभी समझें इनसे अलग हम नहीं रहते, इसी रूप में हम दर्शन देंगे ।"

सार यह है कि योग्य स्थान पर दिया गया दान संप्रदाय की एकता को पुष्ट करेगा । श्रीजी महाराज की प्रसन्नता मिलेगी । विचार किये विना अन्यत्र किया गया दान संप्रदाय तथा संप्रदाय के नियमों को तोडेगा, खण्डन होगा, जिस में परोक्ष रूप से इष्टदेव का द्रोह है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान भाग्य को बदल देते है

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

उत्तर गुजरात के विसनगर के पास देवडा गाँव में स्वामिनारायण भगवान एकबार पधारे, उनेक साथ दो-चार घुडसवार काठी दरबार थे । सामने पार्षद और घोडसवार के बीच में हरख शाह खड़े थे । श्रीजी महाराज को आते देखकर हरखशाह ने हाथ ऊपर करके इशारा किया तो महाराज ने माणकी को रोक दिया उस समय हरखशाहने निवेदन किया की "हे महाराज ! इस तरह आप बाहर-बाहर चले जायेंगे ? घर पधारिये ! स्वामिनारायण भगवानने ना कर दिया । कहे कि हमे आगे जाना है । हरखशाहने कहा महाराज ! संयोगवश आप का यहाँ दर्शन हो गया है तो हम गरीब के घर पधारीये । इसलिये नहीं आना चाहते कि हमारी वजह से आपको कष्ट होगा । महाराज ने कहा हमारा तथा हमारे पार्षदो का आप संमान करें इसमें आपका खर्च हो जायेगा । इसलियए बाहर-बाहर चले जा रहे हैं । नहीं प्रभु ऐसा मत कीजिये । हम गरीब हैं इसलिये आप ऐसा सोच रहे है । भगवान ने कहा हमारे एक वचन का पालन करो तो आऊं । महाराज ! आप जैसा कहें वैसा करेंगे । हम तथा हमारे पांच पार्षद सभी के लिए केवल रोटी और दाल बनवाइयेगा । उस समय गाँव में शाक नहीं मिलता था । आलू उस समय देश में प्रवेश ही नहीं किया था । इसीलिये विचार कर महाराजने केवल रोटी और दाल की बात कही । हाँ महाराज ऐसा ही करेंगे आप घर तो पधारिये समय के अनुकूल होकर महाराज को प्रसन्न करके अपने घर ले गये । भगवान तो अन्तर्यामी हैं । आज गरीब के ऊपर कृपा होनेवाली है ।

हरखशाह अंदर जाकर पत्नी से कहे कि महाराज को वचन देकर घर लाया हूँ । कुछ भी कर्ज या उधार या अगल बगल से मांगकर लाना नहीं है, महाराज तो केवल रोटी और दाल खायेंगे । ऐसा सुनकर पत्नीने कहा ऐसा होता है कही, भगवान तो बहुत दयालू है । आप क्या समझते हैं, व्यवहार ऐसे होता है ? कोई सम्बन्धीजब घर आता है तो लोग उसके स्वागत में सुधार-कर्ज करके भी स्वागत करते हैं । जबकि ये हमारे इष्टदेव हैं उन्हें हम रोटी दाल खिलायेंगे। उनके पास एकतांबा का कलश था जिसे व्यापारी के पास बेच कर पैसा लायीं और सामग्री तैयार करके खीर और मालपूआ बनाई ।

स्वामिनारायण भगवान को बाहर पलंग पर गद्दा तकिया बिछाकर बैठाये थे । सामने हरखशाह नीचे बैठे थे । देखते-देखते रसोई तैयार हो गयी । बडी श्रद्धा के साथ आसन बिछाकर महाराज को जिमाने के लिए भीतर ले गये । वहाँ भोजन की व्यवस्था देखकर महाराज ने कहा हम नहीं भोजन करेंगे । महाराज कृपा करिये । महाराजने कहा आपने क्या कहा था, यह दाल-रोटी है ? हरखशाह बुद्धिशाली किसी का नाम लिये बिना कहने लगे महाराज जो आपने कहा था वैसा ही है, लेकिन थोड़ा ही अन्तर-केवल स्वरूप से है, रोटी सफेद होती है, गुड में बनाने से मालपूआ काला हो गया है । दाल की जगह खीर सफेद बन गयी है, महाराज कृपा कीजिए भूल हो गयी है । नहीं भूल नहीं हमे पता था कि आप गरीब है, लेकिन आप तो धनी हैं । अब हम भोजन तब करेंगे जब आप पांचसौ रुपये सामने लाकर रखें । बिचारा हरखशाह के लिए पांच पैसा भी कठिन था, पांचसो रुपये कहाँ से आये । लेकिन ईश्वर की लीला को कौन जान सकता है । हरखशाह घर में गये और कहने लगे तुमने जो किया उसी का यह परिणाम है । अब महाराज पांचसौ रुपये मांग रहे है, कहाँ से लायें । पत्नी ने कहा व्यापारी के यहाँ जाकर बन्धकरखकर आइये और पांचसो रुपये महाराज को दीजिए, वे ऐसा ही किये । पांचसो रुपये लाकर महाराज के सामने रखे,

बाद में महाराज ने भोजन किया । महाराज ने कहा आप तो यथार्थ में शेठ है, मैं व्यर्थ में ही गरीब समझता था । अब आप स्वामिनारायण के शेठ है, मैं कह रहा हूँ आप शेठ हैं । आप यह पैसा लीजिए और मेरे साथ चलिये ।

१८६८ के साल की बात है । भगवान स्वामिनारायण हरखशाह को साथ लेकर बाजार में गये अरहर को २ हजार मन खरीदवाये । उस समय एक रुपये का चार मन अर्थात् पांच सौ रुपये की दो हजार मन अरहर एक बैल गाडी में भरकर शेठ के घर पर रखने के लिये कहा । जब हमें जरुरत होगी तब हम मंगालेंगे ।

कुछ समय बाद ऐसा समय आया कि दुष्काल पड़ गया । हरखशाहने महाराज को पत्र लिखा । हे महाराज ! इस समय भयंकर दुष्काल पडा हुआ है, आपकी दो सौ मन अरहर यहां पडी है, चोरों का डर है, आप जैसा कहे वैसा हम करने को तैयार है । आप कहें तो गाड़ी में भरकर गढडा भेंज दें ।

श्रीजी महाराज ने चिठ्ठी का जवाब लिखा । शेठ ?वह अरहर हमारी नहीं है, आपकी है । आपके लिये खरीदे हैं । आप उस का उपयोग करे , बेचे, गरीबों को दे । भगवानने कहा है, यह आज्ञा मानकर बेचने लगे, दान देने लगे । भगवान की कृपा से दिन अच्छे आ गये । एक रुपये में चार मन की अरहर - आठ रुपये मन में बेचे औरों को दान दिये । पत्नी प्रसन्न होकर भगवान को भोजन बनाकर जिमाती और कहती है प्रभु आप प्रसाद ग्रहण करो आप की दया से ही यह दिन आया है । भगवान स्वामिनारायणने कहा था कि आप गरीब नहीं हैं, आप शेठ हैं । प्रभु का वचन सार्थक हुआ । इसलिये यह सभी को सीखना चाहिए । संतोष का फल अच्छा होता है । परिश्रण करो, प्रयत्न करो, भगवान हरखशाह की तरह आप के ऊपर भी दया करेंगे ।

इसी तरह परिश्रम करने से परमात्मा की कृपा होगी और अपने जीवन में भी परिवर्तन आ जायेगा । जिन्दगी आनन्दमय हो जायेगी ।

•

निष्ठा प्रभु के नाम की

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

सभी जानते है कि प्रहलाद असुर कुल में पैदा हुए थे । उनके पिता उन्हे खूब त्रास दिये । प्रहलाद को मारने का अनेकों प्रयत्न किये । फिर भी असफल रहे, कारण यह कि जिस पर परमात्मा की कृपा हो, उसका क्या बिगाड़ सकता है । गुरु यथार्थ द्रष्टा हो तो भी उसका अहित नहीं होता । उनके गुरु कौन थे ? छोटी उम्र में इतना ज्ञान कैसे हुआ - इसका उत्तर निष्कुलानंद स्वामी देते है -

गर्भवास थी गुरु कर्या
मुनि नारद ने निरधार ।
निश्चय कर्यो हरिभजशु
जसु, सुख संसार ॥

भगवान की भजन करनी हो तो संसार त्यागना ही पडेगा । इसलिए प्रहलादजीने कष्ट सहन करके भगवान की भजन किया । हिरण्याकशिपु भगवान का द्रोही था । प्रहलाद भगवान के भक्त थे । हिरण्याकशिपु के पास तीनो लोक की सत्ता थी । पुत्र को भगवान की भजन करते देख कर नाश करने का निश्चय किया । हाथी के पैरो तले दवा कर मारने का भी षडयंत्र उसका नाकामयाब रहा । असुरों के स्कूल में पढने के लिए भेंजा । जिससे परिवर्तन और आसुरी संस्कार आवे । फिर भी संस्कार में कोई परिवर्तन नहीं आया । बाद में अपनी होलिका नामकी बहन के साथ प्रहलाद को जलाने का प्रयत्न भी निष्फल गया । पर्वत के नीचे फेंका गया । फिरभी प्रहलादजी अपनी भक्ति कम नहीं किये । पिता के सम्बन्ध को तोड़कर प्रभु के सम्बन्ध को जोड़ा । जितना भी कष्ट आया उसे सहन किया । इतनी छोटी उम्र में भी कष्ट आया उसे सहन किया । इतनी छोटी उम्र में इतनी वीरता, उस बालक प्रहलाद को धन्य है । प्रहलाद की माता पुत्र को वात्सल्य वरसाते हुए कहती हैं कि बेटा ! तुम्हारे पिता तुम्हारे ऊपर इतना त्रास किये हैं । यह सब हम देख नहीं पा रही हैं । बेटा नारायण - नारायण नाम बोलना बन्द करदे, मन में बोला कर, जिससे तुम्हारे पिता का त्रास कम हो जाय । यह वेदना हमसे देखी नहीं जाती । उस समय एक उदाहरण अपनी माता को प्रहलाद देते हुए समझाते हैं ।

एक सुन्दर शहर था । उसमें बड़े-बड़े बगीचे थे । शहर के मार्ग अच्छे थे । उस शहर में सम्पूर्ण व्यवस्था थी इस शहर में एक शेठ रहने आया । एक बड़ा सुन्दर बंगला खरीदा । अद्यतन सामग्री उस में उपलब्ध थी । प्रतिदिन नये-नये पक्वान घर में बनता था । वह शेठ प्रतिदिन शहर के बगीचे में घूमने जाता । उसका मकान एयरकन्डीशन था, डबल वेड की खाट थी । सभी आनन्द ही आनन्द था । समय परिवर्तन हुआ मौसम बदला - वर्षाऋतु आयी । संयोगवश एक मच्छर शेठ के बेड रूम में घुस गया । रात्रि में वह मच्छर शेठ के कान में गुनगुनाने लगा । सम्पूर्ण रात्रि शेठ को नीद ही नहीं आयी । दिन में बेचैनी जैसे रही । नौकरने पूछा क्यों शेठजी रात्रि में नींद नहीं आयी क्या ? शेठ ने कहा एक मच्छर रूम में आकर रात्रि भर परेशान कर दिया । यह सुनकर नौकर ने कहा शेटजी यह बंगला बेंचकर दूसरे शहर में चले जाते हैं । तब शेठने कहा अरे मूर्ख एक मच्छर के परेशान करने से बंगला बेचकर शहर छोड़कर थोडे जाते हैं ?

इस प्रकार माताजी को उदाहरण देकर समझाते हुए कहते हैं कि मेरे लिए तो पिताजी एक मच्छर जैसे है, इनका त्रास मच्छर जितना ही है । इससे भगवान की भक्ति नहीं छोडना चाहिए । जिसने इस प्रकार भगवान की महिमा जाना हो वह इतनी आपत्ति से भगवान की भक्ति नहीं छोड़ता । इसलिये कहा है कि - "हरिनो माण दे सूरनो, नहिं कायर नुं काम जोने" भगवान को ऐसे ही प्रहलाद जैसे सूरवीर भक्त अच्छे लगते हैं । कमजोर नहीं ।

इसलिए बाल मित्रों ! भक्त प्रहलाद तो सभी बालकों के आदर्श है । प्रेरणामूर्ति हैं । छोटी उम्र में भगवान की भक्ति करके, भगवान का साक्षात्कार करके सभी को प्रेरणा दिये कि भगवान की भजन के लिए कोई उम्र नहीं होती । तो आज से ही भजन प्रारम्भ कर देना चाहिए ।

पृष्ठ १० से आगे

महुन्द्रा में महाराजश्री के मुकुट में घनश्याम महाराज का दर्शन

समय महाराजश्री की पगड़ी में घनश्याम महाराज का दर्शन महुन्द्रा की एक माताजी को हुआ । कैसा चमत्कारिक दर्शन जैसे मार्कण्डेय ऋषि को बटवृक्ष के पत्ते में बाल स्वरूप कृष्ण का दर्शन हुआ था ऐसे ही माताजी को महाराजश्री की पगडी में घनश्याम महाराज का दर्शन, यही अमूल्य लाभ है ।

महुन्द्रा निवासी घनश्याम महाराज की लेमिनेशन छबी को एक भाई अपनी दुकान में रखा था उसे ऐसा दर्शन होने लगा कि जैसे घनश्याम महाराज उसकी दुकान में चल रहे हों ।

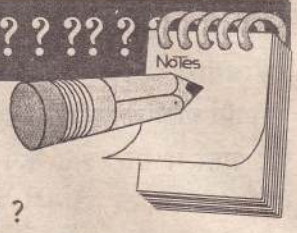
महुन्द्रा मंदिर के सामने एक प्रजापती रहता है । उसका बगल वाले के साथ झगडा हो गया यहाँ तक की कोर्ट कचहरी में जाना पडा एक दिन उसने संकल्प किया कि हमारा यह समाधान हो जाय तो मैं स्वामिनारायण मंदिर में जाऊंगा अन्यथा नहीं । चमत्कार ऐसा हुआ कि कोर्ट के बाहर ही समाधान हो गया । अब वह प्रतिदिन मंदिर दर्शन करने आता है ।

किसी का कुछ भी खोजाय वह प्रभु की मन्नत राखे तो उसका सभी पूरा हो जाता है । किसी बहन को घर से मंदिर आने की मनाई हो तो उसके घरवाले को स्वप्न में ऐसा दर्शन होने लगता है कि उसके घर में जो मूर्ति है उसमेंआकर प्रभु समा रहे हैं । एक रावल भगत को तो घनश्याम महाराज अखंड नजर के सामने ही दिखाई देते रहते हैं । जो बडे योगियों को दुर्लभ है वह वचनामृत के अनुसार यहाँ भक्तजनों को प्राप्त हो रहा है यह सब कुछ निर्दोष भक्तों को तथा भावना वालो को ही संभव है ।

प.पू. महाराजश्री के हाथों से मंदिर में जब से घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा हुइ है तब से इस गाँव में सुख-समृद्धि बढती ही जा रही है । भावुक लोग जितनी श्रद्दा रखेंगे उनका प्रभु अवश्य कल्याण करेंगे । उनका सभी व्यवहार सुधरेगा ।

मैं स्वामिनारायण को नहीं मानता "भगवान के किसी भी अवतार को नहीं मानता ऐसा बोलने वाला असुर ही होता है । ऐसा बोलने वाला मनुष्य तो है ही नहीं वह हिन्दुत्व से भी - रहित है । कोई भी हिदु किसी देवी-देवता की निन्दा नहीं करता । साधु संत-शास्त्र की भी निन्दा नहीं करता । केवल श्रद्धा होनी चाहिए । श्रद्धा में फल छिपा हुआ है ।

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ जेतलपुर की गंगाबा किस ज्ञाति की थी और किस विद्या की जानकार थी ?

प्रश्न : २ वासदा के पास का ऐसा कौन सा गाँव है जहाँ की रानी को परमचैतन्यानंद स्वामीने सत्संग कराया था, उस रानी का क्या नाम था ?

प्रश्न : ३ प.भ. वीर भगुजी किस गांव में जन्मे थे और किसके संग से सत्संगी हुए थे ?

प्रश्न : ४ पटेल कुछ रुपये की आवश्यकता है दोगें ? पटेल तुरत हाँ कहकर गाँव जाने के लिए निकल गये । अपनी संपत्ति गाय, भैंस, बैल, गाडी इत्यादि बेंचकर साढे चार हजार रुपये लेकर महाराज के पास आकर दिये । यह प्रश्न महाराज ने किस पटेल को कहा था । वह पटेल किस गाँव का था और क्या नाम था ?

प्रश्न : ५ देवानंद स्वामी किसके शिष्य थे ?

प्रश्न : ६ "जशोदा कहान तमारो, रोके छे सांज सवारो....." इस पद के रचयिता कौन हैं ?

प्रश्न : ७ मां राधिकाजी का जन्म कहाँ, कब एवं किसके घर हुआ था ?

अप्रैल २००६ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) उदयपुर के राजा की रानी झमकुबाई को श्रीजी महाराज गढपुर पहुंचा दिये थे । (२) उद्धवजी सस्वयं उद्धव संप्रदाय के प्रेरणा थें । (३) हनुमानजी, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विभीषण, परशुराम, बली, व्यास, (अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाश्च विभीषणः कृपः परशरामश्च सप्तैते चिरजीविनः) (४) सनंतन, सनक, सनातन, सनत्कुमार । (५) पांच ज्ञानेन्द्रियां, तीन गुण तथा शक्ति एवं संयोग ए दश अद्रव्य हैं । (६) जो परब्रह्म परमात्मा अपने अक्षरधाम में नित्य दिव्य मूर्तिमान विराजमान रहते हैं तथा जिसमें से प्रत्येक अवतार प्रगट होते हैं बाद में उसी में विलीन हो जाते हैं, इसलिए उन्हें अवतारी समझना चाहिए, वह अवतारी स्वरूप एक ही है । (७) सायंकाल भगवान की आरती के समय को सायंकाल समझना चाहिए ।

१. सोनी भगवानदास वेलजी (मोरबी)
२. माधवजी हरखजीभाई (मोरबी)
३. बीणाबहन भावसार (अहमदाबाद)
४. भावनाबहन भावसार (चांदलोडीया)
५. अरविंदाबहन नरेशभाई भावसार (चांदलोडीया)
६. स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) सां.यो. कंचनबा, कुन्दनबा (मेडा-कडी)
७. माणेकबहन शिल्पाबहन पटेल (दहेगाम)
८. आविक वीरेन्द्रभाई पटेल (विराटनगर-ओढव)
९. माणेकबहन शिल्पाबहन पटेल (दहेगाम)
१०. रेखाबहन कीर्तिकुमार (उंझा)
११. अंजनाबहन नटवरलाल (नांदोल)
१२. साकर बहन कीर्तिकुमार पटेल (दहेगाम)
१३. कोकिलाबहन नटवरभाई पटेल (मेमनगर)
१४. सां.यो. आनंदीबा (विरमगाम)
१५. स्वामिनारायण मंदिर (मोखासण)
१६. गोरधनभाई आर. वाधेला (जामसर)
१७. भावेश, प्रयाग, संदीप, कपील, धर्मेन्द्र, पिनाकीन (मारसुण)
१८. शैलेष (ट्रेकटर) दीलीपबाी पेटल (चीतरगाडा)
१९. सां.यो. मंजुबा भारतीबा (हवेली)
२०. हसुबहन कनुभाई (मणीनगर)
२१. पटेल त्रिभुवनभाई लक्ष्मणभाई (नवावडज)
२२. उर्मिलाबहन कल्पनाबहन (नवावाडज)
२३. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नंदोल)
२४. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल (नांदोल)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद का आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ?

।। भक्तिसुधा ।।

मोहन की चाहना हो तो मान का त्याग करो

- कंचन बहन रणछोडभाई पटेल
(नारणपुरा)

धनबाई मुक्तानंद स्वामी की बहन थी । उन्हें अपने भाई के प्रति बहुत प्रेम था । भाई बहन का प्रेम तो स्वाभाविक होता ही है । लेकिन धनबाई का प्रेम अद्वितीय था ।

मुक्तमुनि संसार छोडकर साधु हुए उसी समय से धनबाई का हृदय दु:खित रहता था । उनकी अन्तरात्माभाई को मिलने के लिए तरस रही थी । मुक्तानंद स्वामी को संसार की तरफ लेजाने हेतु खूब प्रयत्न किया था । लेकिन स्वामी का दृढ वैराग्य देखकर उन्होने विचार किया कि भाई की जैसी इच्छा हो ऐसा हम करेंगी तो भाई हम पर प्रसन्न होंगे । स्नेही के अनुकूल रहने में ही प्रेमलक्षण है । प्रेम के वश होकर धनबाई भी स्वामी के मार्ग पर चलने का निश्चय करलीं ।

धनबाई एक दिन गढडा आयी और श्रीजी महाराज के पास जाकर प्रार्थना की कि "महाराज ! हमें कल्याण की चाहना है । लेकिन अंतर में एक इच्छा है कि भाई (मुक्तमुनि) मुझे उपदेश देकर मोक्ष मार्ग बतावें । उन्हीं के मुख की वाणी सुनने की उत्कंठा है ।

यह सुनकर महाराज मंदहास करने लगे । बाद में बोले कि बाई ! हमारे साधु को स्त्री के साथ बोलने की मनाई है । लेकिन तुझे कल्याण की चाहना है तो मुक्तमुनि को कहूँगा वे अवश्य उपदेश करेंगे ।

बाद में महाराज ने अक्षरदालान में मुक्त मुनि को बुलाकर परीक्षा लेने के लिये कहा कि "मुक्त मुनि ! आपकी बहन साधु होना चाहती है । आपके मुख से मोक्षमार्ग का उपदेश सुनना चाहती है । आप उन्हें उपदेश दीजिये ।

मुक्तानंद स्वामी ने कहा महाराज ! इस प्रकार हम साधु का धर्म कैसे पाल सकते हैं । आपकी शिक्षापत्री के अनुसार स्त्री को कैसे उपदेश कर सकते हैं । यदि आप आज्ञा करें तो त्याग मार्ग के साथ भक्तिमार्ग का सहारा लेकर ऐसे चार पदों की रचना करुं जिससे सभी स्त्रियों के साथ बहन को भी उपदेश मिल सके ।

श्रीजी महाराज मुक्तमुनि की धर्मनिष्ठा तथा आचार दृढता देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए और कहे कि आप ऐसा ही करों ।"

श्रीजी महाराज की आज्ञा मिलते ही मुक्तानंद स्वामी ने "मोहन की चाहना हो तो मानका त्याग करो" इस उपदेश के चार पदो की रचना की । रात्रि में सभा में बैठकर स्वामीजीने चार पद गाए । स्वामी के मधुर कंठ से कल्याणकारी उपदेश सुनकर अंतर में अपार शांति हो गई । इस के बाद उनका बाकी का जीवन मंदिर में ही प्रभुभक्ति में बीता ।

मोहनने गमवाने इच्छो माननी,
त्यागो सर्व जुठी मननी टेकजो,
पतिव्रता नो धर्म अचल करी पालजो,
हरिचरणे रहेजो अबला बई छेक जो,
वली एक बात कई छुं अधिक विवेकनी,
सांभण बहेनी तारा सुखने काज जो,
हरिभजन संगे राखो पूरण प्रीतडी,
त्यागो मद मत्सर जुटी कुल लाज,
सुखदायक तुं जाने सुंदर श्यामने,
अति दु:खदायक मन पोतानुं जाणजो,
मुक्तानंदनी नाव मगन थई सेजो,
रामजी विचारी बोलो अमृत वेण जो,

अपनी बहन धनबाई के लिए स्वामीजी ने स्त्रिओं को सरल उपदेश दिया हैं कि संबंध तो हरिवर का ही श्रेष्ठ और सच्चा हैं । संसार के सभी संबंध तो सूतर के कच्चे धागों के जैसे हैं । कभी भी तूट शकते हैं । इसलिए प्रभु के साथ प्रीत रखकर सभी संजोगो में हरिचरणों में रहना चाहिए । वही जीवन का धर्म और मर्म है । इस संसार में जो सुखदायक कुछ हो तो वह सुंदर श्याम स्वरुप श्री सहजानंद स्वामी ही है और अति दु:खदायक जो कुछ हो तो वह है अपना ही मन । मन के गलत तरंगो और अनुमानो के आधार पर हम वर्तन करतें है और न करने का कार्य भी और न बोलने का बोल देतें है । इसिलिए संसार के दु:खो का जनम भी होता है । भगवत् परायण जीवन की धारा होगी तो प्रभु प्राप्ति सरल हो जायेगी । मुक्तानंद स्वामी भगवान के भजन की सलाह देते हुए कहते हैं

कि "समजी विचारी बोलो अमृत वेणजो ।"

श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में भी कहा है कि "जिस वचन से अपना तथा दूसरे का द्रोह हो ऐसे सत्य वचन को भी नहीं बोलना चाहिए ।

"सत्यं च प्रियंचवद"

सत्य तथा प्रिय वचन बोलना चाहिए । जिससे इस घोर कलिकाल में भी हम श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त कर सकें ।

•

सभी लोग स्वीचडी की दातून किये

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

एक समय श्रीहरि बामण गाँव से महेसाणा गाँव गये । महेसाणा में श्रीहरि का भक्त एक ब्राह्मण परिवार था, इसी परिवार की कुशलबा थी । वे अकेली रहती थी लेकिन कहती थीं कि "महाराज जब साथ में है तो चिंता क्या ?" इस प्रकार मस्ती में रहती थी । कुशल बा के आनन्द का पार नहीं था । महाराज को तथा सभी संतो को साथ में घर ले गयी । श्रीहरि को बैठने के लिए सुन्दर आसन बनाई । उस आसन पर विराजमान करने के लिए गद् गद् कंठ से श्रीहरि की प्रार्थना कीं । महाप्रभु संतो के साथ पधारे । कुशल बा ने प्रभु का उत्तम आसनादिक द्वारा स्वागत किया । श्रीहरि की प्रसन्नता के लिए संतोने गीत गाया ।

इतने में सांझ हो गयी । इसके बाद ब्राह्मणो को बुलाकर भोजन बनवाया । भोजन में खीचडी शाक बनवाया जिसे बडी श्रद्धा के साथ भोजन परसने लगी, भगवान बड़े प्रेम के साथ भोजन किये । जो खिचडी बची उसे ढंक कर रख दी ।

प्रातः महाराज चलने को तैयार हो गये । उस समय कुशलबाने कहा कि बची हुई खिचडी क्या होगी आप सब इस खिचडी को खाकर जायें ।

महाराज वृद्धा की बात मानकर संतो के साथ खाने बैठ गये ।

लेकिन महाराज तो अभी तक दातुन भी नहीं किये थे । महाराज ने कहा शरीर के आत्मा की शुद्धता से कोई मतलब नहीं है - लाओं खिचडी खायें अब इतने प्रेम से खिला रही हो तो खाना ही है ।

कुशल बा बहुत प्रसन्न हुई । अब आप प्रसन्न मन से जा सकते हैं । आज आप विधवा को अनंत सुख दिये हैं ।

संत भी ऐसी खिचडी से दातून किये ।

•

नीच सेवा में भाग्य मानना

- नानीबेन (विराटनगर)

अनंतकोटी ब्रह्मांड के अधिपति स्वयं श्रीजी महाराज ने जिसे सत्संग की मां कहा था । ऐसे स.गु. मुक्तानंद स्वामी बडे महान संत थे । उन्होने श्रीजी महाराज की लीला के कई कीर्तन की रचना की है । उसमें एक कीर्तन है "मोहनने गमवाने इच्छो माननी त्यागो सर्वे जुठ्ठी मननी टेकजो इस कीर्तन में आगे की दूसरी कडी में कहा है "दासी थई तुं रहेजे दीन दयालनी, नीची टेल मळे तो माने मोटा भाग्य जो" भव ब्रह्मादिकने निश्चे मणतो नथी पुरुषोत्तम पासे बेठानी जाग्य जो" नीची टेल अर्थात् सेवा । जैसे सेवा छोटी वैसे उसका फल ऊँचा । नीच सेवा जब मिले तब बड़ी भाग्य समझ कर करनी चाहिए । उ.दा. मंदिर में कचरा साफ करना, पोछा लगाना, मंदिर को साफसूफ करना, संडास, बाथरूम साफ करना, ये सभी नीची सेवा कही जाती है उत्सव तथा समैया में डीश धोने की सेवा हो, बरतन मांजने की सेवा हो, चप्पल सजाने की सेवा हो, यह सेवा नीची कहलाती है । हम कई बार पढते हैं की तन-मन-धन से सेवा करनी चाहिए उसमें भी तन शब्द पहले आया फिर मन और धन, तन की सेवा तो उत्तम कहलाती है । अपने मूल संप्रदाय के कई मंदिरो में ऐसे धनाढ्य सत्संगी नियम लेते हैं की रोज मंदिर साफ करना, चौक साफ करना तथा पोता करना तो फिर वे धनवान कैसे ? तो उनके घर काम वाले काम करते हैं, खुद किसी दिन कोई काम नहीं करते, ऐसे लोगों के लिए तो सेवा की महिमा कीतनी होगी । कितने ऐसे सत्संगी तो मार्जनी रख देते हैं जिससे मंदिर की सफाई हो और पुण्य मिले । स्वयं समयाभाव के कारण ऐसे धर्मनिष्ठ लोग ऐसा करते हैं, उन्हे कहना नहीं

पडता । श्रीजी महाराज जब नीलकंठ वर्णी के रूप में वन विचरण करके लोज गाँव में पधारे उसी समय से स्वयं भी सेवा कार्यारम्भ कर दिये थे । सभी के लिए शिक्षार्थ वे करते रहे । श्रीजी महाराज को रामानन्द स्वामीने जब धर्मधुरा सुप्रत की अपनी गद्दी पर बैठाया उसके बाद भी वे अपना सेवा कार्य छोडे नही । जब गढडा में मंदिर बन रहा था तो वे स्वयं घेला नदी से पत्थर मस्तक पर रखकर लाते । सभी को इसकी शिक्षा मिले इसलिए वे यहकार्य किये थे । सभी को ऐसी आज्ञा किये कि जो भी प्रातः घेला स्नान करने जाये वहाँ से एक पत्थर लावे ऐसा करने से हम उसके ऊपर प्रसन्न होगें । तब एक मुसलमानभाईने सोचा की इतनी सेवा में अपना कल्याण होता हो तो हम भी पत्थर लायेंगे । बाद में वह श्रीजी महाराज का दर्शन करके घेला नदी गया और २१ शेर का पत्थर उठाकर लाया । भगवान को आकर बताया कि हे स्वामिनारायण आपने कहा तो मैंने भी एक पत्थर लाकर नीव में डाला हैं । आपने कहा है कि जो एक सेर का पत्थर भी लायेगा उस के एक पीढी का कल्याण करेंगे तो मैने २१ सेर का पत्थर लाया है । तो हमारी कितनी पेढी का कल्याण करेंगे ? तब श्रीजी महाराज ने कहा जाओ हम तुम्हारी २१ पीढी का कल्याण करेंगे । ऐसा ही हुआ कि उस मुसलमान के २१ पीढी का कल्याण हो गया । दूसरी एक बात और - गढपुर मंदिर का काम चल रहा था उस समय मंदिर के पास में एक वृद्धा माता रहती थी । वह सत्संग की द्वेषी थी । कभी वह सेवा की नही । कुछ कोई कहे तो नाराज हो जाती थी। किसी दिन एक कुत्ता आकर उनके घर में विष्टा कर दिया, इसी तरह प्रायः होता, एक दिन क्रोध में आकर उस कुत्ते को पत्थर फेंक कर मारा तो वह पत्थर उसी नींव में जाकर गिर गया, यही इस वृद्धा का पुण्य इसके अलांवा सभी पाप । इतने से श्रीजी महाराज उसके अंतिम समय में स्वयं लेने आये । उस समय वह वृद्धा पश्चाताप करने लगी और हाथ जोडकर कहने लगी हे स्वामिनारायण आप हमें क्यों लेने आये ? सम्पूर्ण जीवन मैने पाप किया था । आप का नाम भी मैने नहीं लिया । आप के प्रति अपराध ही किया है । तब महाराज ने कहा, एकबार तुम कुत्ते को पत्थर फेंक कर मारी थी, जो पत्थर मेरे मंदिर के नींव में आकर पड़ा, उसी पुण्य का फ़ल है कि मैं तुम्हे लेने आया हूँ । अब विचार करने लायक है कि बिना विचारे अर्थात् अज्ञान में भी एक पत्थर मंदिर की नवीं में आ कर गिरा और महाप्रभु अति दयालु श्रीजी महाराज स्वयं उसे लेने आये, हम उनकी महिमा जानकर यदि सेवा करे तो कितना पुण्य कारक और लाभदायी होगा ।

•

प्रान्तीज की लक्ष्मीबाई

- कंचनबहन बाबूभाई पटेल
(रतनपर - मूलीदेश)

उत्तर गुजरात में प्रांतीज नाम की एक तहसील है । वहाँ लक्ष्मीबाई नाम की एक भक्ता रहती थी ।

लक्ष्मीबहन धर्म का पालन नियमपूर्वक करती थी । जिससे उनके पति को अच्छा नहीं लगता था । सत्संग छोडाने के लिए अनेकों प्रयास किये । नाना प्रकार के दुःख देने लगे। फिर भी वे सत्संग छोडी नहीं ।

ऐसे समय स्वामिनारायण भगवान प्रांतीज गाँव में पधारे । इसका समाचार लक्ष्मीबाई को मिला । वे तुरंत ही दर्शन करने के लिए चलने लगी, इतने में उनका पति उन्हें घर में बंद कर दिया । और कहने लगा कि बुला तुम्हारा स्वामिनारायण कहाँ है । जब तक तूं स्वामिनारायण धर्म नही छोडेगी तब तक मैं तेरी छाती पर पलंग बिछाकर बैठूंगा । इस प्रकार वह नराधम रात भर उनकी छाती पर सोया रहा ।

लक्ष्मीबाई श्रीहरिको प्रार्थना करने लगी, इस पर भगवान प्रसन्न होकर वहाँ पधारे और छाती पर हाथ फेरे तो पीडा चली गयी । भगवान प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहा, तब उन्होंने मांगा - हे महाराज ! ऐसे पापी के साथ मुझे अब नहीं रहना है, अब आप अपने धाम में ले चलिये । उसी समय भगवान उनके जीवात्मा को दिव्य विमान में बैठाकर स्वधाम में ले गये ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी का उत्सव धामधूम से मनाया गया।

सर्वावतारी पुर्णपुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान की २२५ वीं जन्म जयंती का उत्सव चैत्र सुद-३ रामनवमी के शुभ दिवस पर अहमदाबाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर में राजाधिराज श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में धामधुम से संपन्न हुआ।

प्रातः ६-३० बजे अक्षरभुवन में बालस्वरुप घनश्याम महाराज का अभिषेक-पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हस्त से वेद विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। दोपहर १२-०० बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी भगवान का प्राकट्य उत्सव आरती हुई थी। उस के बाद समग्र दिन शहर और गाँवो के दर्शनार्थी दर्शन करने के हेतु से पधारे।

साम ४-०० बजे श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा गत वर्ष ली गई परीक्षा में अच्छे प्रतिशत से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को और केन्द्र संचालको को प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हस्त से पुरस्कार प्रदान करने के कारण सभी बहुत आनंदित हो उठे। प.पू. लालजी महाराज ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया। रात्रि १०-१० मिनिट पर सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराज की प्राकट्योत्सव आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के द्वारा उतारी गयी तब हजारो हरिभक्तो को इस दिव्य दर्शन का लाभ मिला। पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से सुंदर आयोजन हुआ था।

- कोठारी धर्मप्रकाशदासजी

श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू. बडे महाराजश्री का ६३ वाँ प्राकट्योत्सव धामधूम से मनाया गया।

श्रीजी महाराज के छठ्ठे वंशज प.पू. महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ६३ वाँ प्राकट्योत्सव सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में चैत्र शुक्ल-२ ता.१६-४-२००६ के शुभ दिवस पर धामधूम से मनाया गया।

भरतखंड के राजाधिराज सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रसादी के दिव्य सभामंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी के उपस्थिति में प.पू. बडे महाराजश्री श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ६३ वें प्राकट्योत्सव को मनाया। उस समय हजारो संत-महंत और हरिभक्त सभा में उपस्थित थे। विद्वान पंडितोने वेद गान के साथ स्वस्तिवाचन करके पूजन विधि की थी। हरिभक्त और संतवर्णीने समूह आरती की थी। उसके बाद पू. महंत स्वामी और विद्वान संत-मंडल ने प.पू.ध.धु. महाराजश्री के ६३ वें प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर उनके दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम की प्रवृत्ति के संदर्भ में भारपूर्वक सभा को संबोधित किया। प.पू. बडे महाराजश्रीने पैंतीस वर्ष तक सत्संग को जो सुख दिया था उसके लिए समस्त संप्रदाय उनका ऋणी है। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद दिया। प.पू. बडे महाराजश्री ने संकल्प को परिपूर्ण करने के लिए सभी को तत्पर रहने के लिए कहा। गुजरात की जीवन-डोर समान नर्मदा योजना - सरदार सरोवर डेम के आयोजन में समस्त संप्रदाय को गुजरात सरकार के साथ जुडने के लिए कहा। उस के बाद सभी हरिभक्त और संतगण ने प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त किया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने दोपहर २-०० बजे युनिवर्सीटी ग्राउन्ड पर मुख्य मंत्रीश्री नरेन्द्रभाई मोदी सरदार सरोवर डेम के बांधकाम के बंध के विरोध में ६१ घंटे के उपवास पर आधीन हुए थे। उनको श्री नरनारायणदेव के बल और आशीर्वाद की कामना प्रदान की थी। और गुजरात की करोड जनता के प्राण समान नर्मदा का कार्य पुनः प्रारंभ हो ऐसा आशीर्वाद प्रदान कीए थे।

- कोठारी धर्मप्रकाश दास

सुरत शहर में श्री नरनारायणदेव पीढ के छठ्ठे निवृत्त आचार्यश्री प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का पदार्पण

सुरत शहर में श्री नरनारायणदेव देश अहमदाबाद और मूलीश्री राधाकृष्णदेव के हजारो हरिभक्त गण नौकरी के हेतुसे वहाँ स्थायी हुए हैं। जिन्हों ने वहाँ जाकर सत्संग के साथ श्री नरनारायणदेव का गौरव-गरिमा को बढाया है।

सुरत श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल और यहाँ के हरिभक्तो के आग्रहपूर्वक आमंत्रण और प्रार्थना को स्वीकृत करके श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लाभ के हेतु से ८-४-२००६ से ता. ११-४-२००६ पर्यन्त प.पू. बडे महाराजश्री सुरत शहर में पधारे तब हजारो हरिभक्तों ने प.पू. महाराजश्री का भव्यातिभव्य स्वागत किया। अपने प्राणपूज्य महाराजश्री का सत्कार किया।

दिनांक ९-४-२००६ के दिन शिल्पी की वाडी में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में हजारो हरिभक्तगण सभा का दिव्य लाभ लिये और पू. महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद प्राप्त किए।

दिनांक १०-४-२००६ के दिन उमिया माताजी के मंदिर भांडे के विस्तार में विशाल सत्संग सभा में संतो ने प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण कार्य की स्परेखा समझायी थी। और अंत में सभा को पू.. बडे महाराजश्री ने श्रीजी महाराज की प्रसादी की दिव्य अलौकिक वस्तुओं को स्थायी वैज्ञानिक पद्धतिओं में रक्षा की जाए और संप्रदाय के इतिहास में और विश्व में अजुबे की तरह से सर्वोपरि भगवान का सर्वोपरि म्युझियम के निर्माण की महिमा-माहात्म्य की पूर्ण जानकारी देकर सभा को दिव्य आशीर्वाद भी दिये। प.पू. बडे महाराजश्री सुरत के रामपुरा, बडे भागोल। वराछारोड उधना और बेड रोड के श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्शनार्थ पधारे थे।

सुरत के २०० उपरांत धर्मकुल प्रेमी हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी के वर्षोका संकल्प परिपूर्ण किया और हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण कार्य मे रुपये पच्चीस लाख जितनी रकम प.पू. महाराजश्री को अर्पण की थी।

प.पू. महाराजश्री के पदार्पण दरम्यान १०० जितने शूरवीर हरिभक्त भगुजी की तरह मोटर सायकल और मोटरकार के साथ सेवा में सदंतर रहे थे।

प.पू. बडे महाराजश्री ने प.भ. नंदुभाई अमीचंददास पटेल (मोटपवाले) के यहाँ रांदेल विस्तार में तीन दिन तक रुक कर प.भ. नंदुभाई और हरिभक्तो को अलौकिक लाभ दिया।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला श्री प.भ. भगवानजीभाई माधवभाई परमार के यहाँ न्यु सिविल विस्तार में तीन दिन रुक कर इस परिवार को महालाभ प्रदान किया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के तीन दिन के पदार्पण के प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल के सुरत के प.भ. नंदुभाई के पटेल, श्री भगवानजीभाई एम. परमार, श्री दयालजीभाई एम. टांक, श्री मणीभाई शंकरभाई पटेल आदि अनेक छोटे बडे हरिभक्तों ने अविरत सेवा प्रदान करके श्री नरनारायणदेव और लक्ष्मीनारायण देव का आशीर्वाद और प्रसन्नता प्राप्त की।

- श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल सुरत

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से और श्रीहरि के दिव्य कुल धर्मकुल और श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के साथ सहकार से स.गु.शा.स्वामी परमेश्वरदासजी (पूजारी रंगमहोल) ने उनके गुरु स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी की शिष्य परंपरा के छट्ठी पीढी के अ.नि.स.गु. स्वामी माधवजीवनदासजी गुरु स.गु. स्वामी घनश्यामदासजी की पुण्य स्मृति में श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में प्रसादी के सभा मंडप में ता. १८-४-२००६ से ता. १८-४-२००६ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी हरिजीवनदासजी (महुन्डावाले) और शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) ने अपनी सुमधुर कंठ से कथामृत पान कराया। संहिता पाठ के वक्ता शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (सोकली) भी उपस्थित थे।

इस कथा प्रसंग पर महंत स्वामी कृष्णप्रसादजी (टोरडा) आदि संतमंडलने सुंदर सेवा प्रदान की थी।

पूर्णाहुति के शुभ दिन पर श्रीहरि के दोनो अपर स्वरूपों के वरद् हस्त से कथा की पूर्णाहुति की गई। स.गु. पुजारी परमेश्वर स्वामीने गुरुपरंपरा में मिली हुई श्रीहरि की अमूल्य प्रसादी की वस्तु श्री स्वामिनारायण म्युझीयम के लिए प.पू. बडे महाराजश्री को अर्पण की थी। प्रासंगिक सभा में पू. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी पू. महंत स्वामी माधवजीवनदासजी, पू. पी.पी. स्वामी आदि विद्वान मंडलने पू. माधवजीवनदासजी स्वामी की सभा की प्रशंसा की थी।

अहमदाबाद, सरढव, कटोसण, मारूसणा, गुलाबपुरा, देवपुरा और पंढरपुर आदि गाँवो के हरिभक्तो ने इस पारायण प्रसंग पर सेवा-सहयोग दिया। *- रघुवीर स्वामी*

जेतलपुर में १८० वाँ पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि महान तीर्थभूमि जेतलपुर धाम में बिराजमान संकल्प मूर्ति सर्वोपरि श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १८० वां पाटोत्सव धामधूम से संपन्न हुआ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में दिनांक १७-३-२००६ से २३-३-२००६ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह शा. व्रजवल्लभदास तथा शास्त्री भक्तिनंदनदास के वक्तापद पर संपन्न हुआ था। त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग वेद विधिपूर्वक संपन्न हुआ।

फागुन वद-८ के प्रातः श्रीहरि के सातवे वंशज श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हस्त से श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार विधि से महाभिषेक संपन्न हुआ। उसके बाद सभा मंडप में श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठा और अक्षर महोल वाडी में प्रार्थना खंड में मूर्ति प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् से हुई। कथा की पूर्णाहुति पू. महाराजश्री पू. महाराजश्रीने आरती उतारकर की। पाटोत्सव के यजमान प.भ. चिमनभाई परसोत्तमदास पटेल (भातवाले) चि. श्री निरवभाई, श्री कल्पेशभाई और श्री अल्केशभाई आदि परिवारने सभा में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री महाराजश्री का पुजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया। पू. पी.पी. स्वामी आदि संतो ने विद्वतापूर्ण प्रवचन किया।

- महंत कृष्णप्रकाशदास

कांकरिया मंदिर कष्टभंजन देव का पाटोत्सव मनाया गया

चैत्र सुद-१५ श्री हनुमान जयंती के दिन कांकरिया स्वामिनारयण मंदिर में बालस्वरूप कष्टभंजनदेव का पाटोत्सव एवं मारुति यज्ञ पूजारी देव स्वामी और कोठारी आनंद स्वामीने महंत गुरुप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से दादा की अभिषेक विधि की। संध्याकाल में प.पू. बडे महाराजश्री ने यज्ञ की पूर्णाहुति अपने हाथों से की। हरिभक्तो ने रात्रि में श्री हनुमान चालीसा का सुंदर पाठ किया। कष्टभंजन देव पाठमंडल को चार वर्ष पूर्ण होने के कारण संतो को आशीर्वाद देकर उनका ऊत्साह बढाया। *- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, साधु स्वयंप्रकाशदास*

कर्मशक्ति (नए नरोडा) मंदिर को सातवाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद और आज्ञा से २१-४-०६ के अवसर पर इस मंदिर में ठाकोरजी का पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से धामधूम से मनाया गया। ता. १५-४-०६ से २१-४-०६ से श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण पू. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी तथा पू. शा. स्वामी हरिजीवनदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। समूह महापूजा और कथा में जन्मोत्सव का वृत्तांत धामधुम से मनया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम दो रात तक चला। समस्त सभा को और यजमान परिवार प.भ. शैलेषभाई पटेल को प.पू. महाराजश्री ने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया। समस्त बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के हेतु लक्ष्मीस्वरूपा अ.सौ. गादीवालाश्री भी पधारी थी। अनेक हरिभक्तोने इस प्रसंग पर सेवा प्रदान की थी। प.भ. दासभाई के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने अखंड सेवा प्रदान की।

- गोरधनभाई सीतापरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ श्री स्वामिनारायण भगवान की २२५ वी जन्म जयंती-प्राकट्योत्सव चैत्र सुद-९ के दिन स्वामिनारायण मंदिर में मनाया गया। इस उपलक्ष्य में ठाकोरजी का अभिषेक, महापूजा, जनमंगल, शिक्षापत्री, वचनामृतपाठ, तथा २२५ दियों की रोशनी की गई थी। बालिकाए अपने मस्तक पर कलश लेकर शोभायात्रा में जुड गई थी। महंत स्वामी हरिवल्लभदास और महेन्द्र भगत ने सुंदर आयोजन किया था।

- शा. व्रजवल्लभदास

नवागाम (जेतलपुरदेश) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्रथम आगमन

जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के देश में आए हुए नवागाम श्री स्वामिनारायण मंदिर के १२१ वे पाटोत्सव के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

पधारे थे । प.पू. महाराजश्री ने सबसे पहले ठाकोरजी के पाटोत्सव की आरती उतार के दर्शन का दिव्य लाभ प्रदान किया था । सभी हरिभक्तोके घर पू. महाराजश्री ने पदार्पण करके उनके घर को तीर्थ बना दिया था ।

प्रासंगिक सभा में महंत आत्मप्रकाश-दासजी, पू. पी.पी. स्वामी और शा. हरिओम स्वामीने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । हरिभक्तोने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में भी आर्थिक सेवा की थी । *- कोठारीश्री*

कोठंबा (पंचमहल) मंदिर का ३३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

झाडी देश के गुरुकरशनदास स्वामीने प्राण सिंचन करके सत्संग की वाडीको संभाला है । देव-आचार्य के प्रति अखूट निष्ठा होगी तो कल्याण निश्चिय होता ही है । ऐसी समझ स्वामीजी सभी हरिभक्तों को देते थें । उसे झाडी देश के कोठंबा श्री स्वामिनारायण मंदिरके पाटोत्सव के उपलक्ष में दिनांक २५-३-०६ से २७-३-०६ तक श्री पुरुषोत्तमप्रकाश के काव्य की पारायण पी.पी. स्वामी के शिष्य महंत शास्त्री ईश्वरजीवनदासजी (धरियावद) और शा. भक्तिनंदनदास (जेतलपुर) के वक्तापद पर हुई थी । समग्र उत्सव के यजमान प.भ. प्रभुदास रावजीभाई पटेल का परिवार था ।

ता. २७-३-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे तब हरिभक्तों ने बहुत ही उत्साह से उत्सव करकेपू. महाराजश्री को प्रसन्न कर दिया । वहाँ से सीधे मंदिर पधारकर श्रीहरिकृष्ण महाराज का वेदविधिसर अभिषेक करके अन्नकूट आरती उतारी थी । उसके बाद कथा की पूर्णाहुति की थी । सभा में स्वामी के शिष्य स्वामी माधवप्रसादजी, हरिभक्त, ट्रस्टीओने और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल इन सभी ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किए थे । जेतलपुर मंदिर से पूजारी श्याम स्वामी, हरिओम स्वामी और अहमदाबाद से संतगण पधारेथे । समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद प्राप्त हुये थे ।

- शा. भक्तिनंदनदास

धरियावद मंदिर में मारुतियज्ञ

सत्संग में नया बना हुआ गाँव धरियावद में श्री हनुमानजी महाराज के प्रताप से सत्संग का बीज इस स्थल पर फलित हुआ है । और बहुत ही कम समय में पांच शिखरों वाले मंदिर का निर्माण हुआ है । यहाँ ता. १३-४-०६ चैत्र सुद-१५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पी.पी. स्वामी और महंत शा. ईश्वरजीवनदासजी की प्रेरणा से अपने मंदिरमें मारुती यज्ञ का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर हजारो की संख्या में हरिभक्तों को दर्शन का लाभ मिला था ।

- शा. भक्तिनंदनदास

सादरा मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

गांधीनगर जिल्ला के सादरा गाँव में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारणघाट के महंत शा. घनश्यामप्रकाशदास की प्रेरणा से ठाकुरजी का पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया । महापूजा विधि शा. विजयप्रकाश-दासजीने करवायी थी ।

- शा. पूर्णप्रकाशदास

नए वणझर

सरखेज के पास नए वणझर गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सभी हरिभक्तों के साथ मिलकर श्रीहरिजयंती की धुनि-भजन कीर्तन और रात्रि को प्राकट्य उत्सव मनाया गया । श्री राजुभाई (पेट्रोल पंप वाले) श्री प्रकाशभाई, श्री नीतीनभाई आदि सभी सेवा में अग्रणी थे ।

- कोठारी रमणभाई

कठलाल मंदिर में दशाब्दि पाटोत्सव मनाया गया

कठलाल श्री स्वामिनारायण मंदिरमें ता. २४-३-२००६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हस्त से ठाकुरजी का शताब्दी पाटोत्सव महोत्सव बहुत भव्यता से मनाया गया । हरिभक्तो ने भी आचार्य महाराजश्री और भावि आचार्य महाराजश्री की आरती उतारी और आशीर्वाद प्राप्त किया । समग्र आयोजन पू. शास्त्री पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से हुआ था ।

- कोठारी महेशकुमार

नवावाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २७-३-०६ से ता. २-४-०६ तक शा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन पारायण का आयोजन किया गया था । ता. २-४-०६ के दिन पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । और ठाकुरजी की आरती उतारी थी । उसके बाद कथा की पूर्णाहुति की गई थी । प.भ. पंकजभाई भावसार (श्री नरनारायणदेव युवक) के परिवार ने यजमान पद का लाभ लेकर प.पू. महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त किये ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

नरनारायणदेव संस्था द्वारा इनाम वितरण का आयोजन

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा ता. १८-१२-२००५ के रविवार के दिन २२ केन्द्रो पर ली गयी धार्मिक परीक्षा में २१५० सत्संगी बालकोने भाग लिया था । जिस में से १२४० विद्यार्थी उत्तिर्ण हुए थे ।

(१) **बाल सत्संग :** १. नयनकुमार भरतभाई पटेल, असारवा गुरुकुल १०० गुण । २. ब्रिजेशकुमार जीतेन्द्रभाई पटेल, असारवा गुरुकुल १०० गुण । ३, हरदीप हनुमानभाई परमार, एप्रोच बापुनगर ९६ गुण । ४. रविकुमार चिनुभाई चौधरी, बालवा ९६ गुण । ५. विहारकुमार आर. पडशाल, मेघाणीनगर, ९६ गुण ।

(२) **किशोर सत्संग :** १. किंजलकुमार भगवतभाई पटेल, असारवा गुरुकुल १०० गुण । २. जयकुमार हसमुखभाई पटेल, असारवा गुरुकुल १०० गुण । ३. विजयकुमार विनोदभाई राठोड, कोटेश्वर गुरुकुल ९९ गुण । ४. हर्षराज नरेन्दसिंह डाभी, डांगरवा ९८ गुण । ५. भवदीय भरतभाई रायडीया, एप्रोच बापुनगर ९७ गुण

(३) **सत्संग परिचय :** १. फाल्गुनीबेन ए. पटेल, विराटनगर ९९ गुण । २. निरवकुमार दिनेशभाई पटेल, ताता नगर, ९९ गुण । ३. हार्दिक वसंतभाई बांधाणी, कोटेश्वर गुरुकुल ९८ गुण । ४. निरंजनकुमार अशोकभाई देसाई, असारवा गुरुकुल ९८ गुण । ५. इलाबेन डी. पटेल, विराटनगर ९७ गुण ।

(४) **सत्संग प्रवीण :** १. अजयसिंह विक्रमसिंहराणा, कोटेश्वर गुरुकुल ९८ गुण । २. जिग्नेस मणीलाल चौधरी, कोटेश्वर गुरुकुल ९८ गुण । ३. जयकुमार कानजीभाई रायका, कोटेश्वर गुरुकुल ९८ गुण । ४. चीरायुकुमार पी. देवाणी, मेधाणीनगर ९७ गुण । ५. हितांशु रोहितकुमार भट्ट, कोटेश्वर गुरुकुल ९१ गुण ।

(५) सत्संग पारंगत : १. प्रियंका प्रविणसिंह डाभी, डांगरवा ९२ गुण । २. देवेन्द्रसिंह दीलीपसिंह डाभी, डांगरवा ८२ गुण । ३. अश्विनकुमार गोविंदभाई गज्जर, डागंरवा ८२ गुण । ४. जयदिपसिंह भावसिंह डाभी, डांगरवा ७७ गुण । ५. जैमिनीबहन जयेन्द्रसिंह पंड्य, डांगरवा ७६ गुण ।

धार्मिक परीक्षा के प्रत्येक विभाग में प्रथम पांच नंबरो को इनाम तथा प्रमाणपत्र तथा धार्मिक शिक्षण विभाग के सभी स्थानिक केन्द्र संचालको को प.पू. भावि आचार्य लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ वरद् हस्त से चैत्र सुद-९ श्रीहरि जयंती के ता. ७-४-२००६ के शुक्रवार के दिन साम को ४:३० बजे सन्मानित किया गया था। - *प्रविणभाई पटेल*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और महंत स्वामी प्रेमजीवनदादसजी के मार्गदर्शन से चैत्र सुद-९ श्रीहरि प्राकट्योत्सव धामधूम से मनया गया। इस प्रसंग पर ता. ५-४-२००६ से ७-४-२००६ के दरम्यान श्रीमद् सत्संगिजीवन पूर्वार्ध की कथा शा. सत्यस्वरूपदास के वक्तापद पर हुई थी। चैत्र सुद-९ प्रातः ठाकोरजी का केसर स्नान तथा समूह होमात्मक महापूजा और १२ घंटे की अखंड धून तथा शहर में भव्य शोभायात्रा और रात्रि को १०-१० बजे प्राकट्योत्सव आरती आदि सभी प्रसंग धामधूम से संपन्न हुए।

समग्र संचालन स्वामी प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था। - *शलैन्द्रसिंह झाला*

धांगधा में श्रीजी महाराज का प्रत्यक्ष चमत्कार

मेथाण गाँव से शायद ही कोई अंजान होगा। कारण यह है की श्रीजी महाराज यहाँ अठ्ठारह बार पधारेहै। यहाँ महाराज का वरदान है कि मेरे आश्रितों को यमराज से किसी को भय नहीं होगा। जो आज भी देखने में मिलता है। यहाँ महाराज की अति कृपा से दरबार काकजीभाई तथा पूंजाजी की छट्टी पेढी का परिवार धांगधा में स्थायी होकर प्रभु का भजन श्रवण करतें हैं। अ.नि. जालुभा दरबार की धर्मपत्नी खुशमनबा (८५ वर्ष) ता. १०-३-०६ को दोपहर में १-१० बजे जब अक्षरनिवासी हुए तब वहाँ कक्ष में श्रीजी महाराज की मूर्ति में से तेज का प्रकाश समस्त कक्ष में फैल गया। वहाँ उपस्थित सभी बहनो और भाईयोंने प्रत्यक्ष देखा और इसका अनुभव भी किया। इस समय वहाँ लाइट बंद थी। इसीलिए यह घटना भी सत्य साबित हुई। सचमुच इस भयंकर कलयुग में भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। यह खुशमनबा कुशलकुंवरबा के धरमपुर गाँव की थी।

वहेलाल मंदिर

प.पू. बडे महाराजश्री के ६३ वें प्राकट्योत्सव के शुभ प्रसंग पर सत्संगी बालको ने आधे घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून करके अपने प्राण प्यारे प.पू बडे महाराजश्री के अंतर से आशीर्वाद प्राप्त किए थे। - *गोरधनभाई सीतापरा*

अयोध्या श्री स्वामिनारायण

अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से चैत्र सुद-८ बुधवार ता. ५-४-०६ के दिन बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराजश्री की अयोध्या लीला चरित्र कथा पुराणी स्वामी वेदान्त स्वरूपदास गुरुपुराणी स्वामी ज्ञानजीवनदासजी (नासिकवाले) ने सुंदर की। इस कारण यजमान परिवार पूजारी कानजी लालजी मूडीया और उनके पुत्र करशनभाई कानजी का परिवार (सुखपर-कच्छ) दिव्य लाभ लेकर कृतार्थ हो गया।

कंजरीकंपा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव मनाया गया

साबरकांठा के कंजरीकंपा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २२-३-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कलोल के स्वामी हरिचरणदासजी स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी और छोटे पी.पी. स्वामीने पधारकर कथा-वार्ता धून भजन और ठाकोरजी के पाटोत्सव की आरती करके हरिभक्तों को दिव्य लाभ दिया था। महापूजा विधि स्वामी सूर्यप्रकाशदासजीने करवाई थी। आस-पास के समीरीकंपा, अलवाकंपा आदि गाँव के हरिभक्तों को दर्शन का और प्रसाद का लाभ मिला था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने फोन द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया। - *कोठारी डाह्याभाई*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी (U.S.A.)

प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. ८ ऐप्रिल २००६ के चैत्र सुद-९ के दिन इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का २२५ वी जन्म जयंती महोत्सव शा. स्वामी माधवप्रसादजी और हरिभक्तो के साथ मिलकर मनाया।

प्रातः ११ से ३ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गई। दोपहर को अनेक पकवानो का अन्नकूट भगवान के भोग में रखा गया। साथ ही भजन-कीर्तन और धून का कार्यक्रम हुआ। शाम को ३ से ८ तक मेडीकल केम्प में I.S.S.O. सेवा संस्था में 'बोन मेरो' कार्यक्रम आयोजित किया गया। माधवप्रसाद स्वामीने रामनवमी के उत्सव का सुंदर प्रवचन किया था। हरिभक्तों ने प्रसादी की चीजों का दरशन किया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की बालिकाओंने सुंदर नंद संतो का रास-गरबा का कार्यक्रम किया। बच्चोने जनमंगल के १०८ श्लोक गाए। २५१ यजमान हरिभक्तोंने समूह में आरती की। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति अति सुदंर चल रही है।

- *प्रहलादभाई वी. पटेल*

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर नरनारायणदेव जयंती

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कृपा आशीर्वाद से और महंत शा.धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव धामधूम से मनाया गया। स्वामीने नरनारायणदेव की महिमा और हरिभक्तोंने फुलदोलोत्सव का कीर्तन राग में गाए थे। वचनामृत ग.प्र. ४८ का नित्य वांचन करने का सूचन किया गया। अहमदाबाद मंदिर में बिराजमान सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का आश्रय और निश्चय रखने का सूचन स्वामीजीने किया। प्रमुखश्री प.भ. जगदीशभाई ने बोस्टन मंदिर प्रतिष्ठा की बात की। इस प्रसंग में बडे भगत, छोटे भगत धीरूभाई भुगंलीया, नरेश गांधी, ठाकुरभाई

और विष्णुभाई ने सेवा दी थी।

सर्वावतारी श्रीहरि का २२५वा प्राकट्यत्सव मनया गया।

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के २२५ वे प्राकट्योत्सव के उपलक्षमें ता. १-४-०६ से ८-४-०६ तक स.गु. भूमानंद स्वामी रचित श्री घनश्याम लीलामृत की कथा शा.स्वामी धर्मवल्लभदासजीने अपनी सुमधुर भाषा में की थी। ता. ७-४-०६ की शाम को श्री दिनेशभाई जोशी द्वारा महापूजा का दिव्य लाभ हरिभक्तों को दिया गया। २२५ हरिभख्तों ने समूह में आरती का लाभ लिया। कथा के यजमान श्री हरिकृष्णभाई और अमरीषभाई थे तथा प्राकट्यत्सव की आरती केयजमान श्री विष्णुभाई(सोलावाले)तथा विशाल थे। महिला मंडल ने अद्‌भुत सेवा प्रदान की' श्री स्वमिनारायण म्युझियम 'की सेवा कई हरिभक्तों ने दी। अंत में महंत स्वामीने और प्रमुख जगदीशभाईने यजमानो का स्वागत किया था।

- वसंतभाई त्रिवेदी और विष्णुभाई

कोलोनीया (U.S.A.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सभी उत्सव धामधुम से संपूर्ण हुए। महंत स्वामी देवप्रसाददासजीने बहुत रसपूर्वक हरिभक्तों को उत्साहित किया। ता. १९-३-०६ रविवार की शाम को ४ से ८ श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव धामधूम से मनाया गया। बोस्टन मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदास और न्युजर्सी के महंत स्वामी माधवप्रियदास स्वामीने श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य सुंदरता से समझाया। देव स्वामी तथा हरिभक्तों ने कथा-कीर्तन आदि किए। मेडिकल केम्प में डॉ. हेमेन्द्रभाई पटेल, डॉ. जिस्मता चोक्सी, डॉ. चिराग पटेल, पलकु पटेल, धर्मिष्ठा बहन आदि ने हरिभक्तों ने उमदा सेवा प्रदान की। प्रमुखश्री नयनभाई परीख महंत स्वमी के साथ रहकर अतिथियों का सत्कार किया।

डॉ. कीरीटभाई पटेल के मातुश्री का निधन होने के कारण सभीने श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धूनी की।

श्रीहरि प्राकट्योत्सव चैत्र सुद-९ की दोपहर १२-०० श्री रामचंद्र भगवान की आरती करके जन्मोत्सव मनया गया था। प.भ. उपेन्द्र शाह के परिवार ने पू. देव स्वामी और जेतलपुर के स्वा. विश्वप्रकाशदास के मार्गदर्शन से रंगबीरंगी फूलों से सुंदरजन्म स्थान तैयार किया। २२५ वीं जन्म जयंती के निमित पर २२५ मिनिट की धून की गई। पू. देव स्वी ने बालस्वस्म घनश्याम महाराज की लीला चित्र की सुंदर कथा की। समग्र उत्सव के यजमान प.भ. रमेशभाई पटेल का परिवार था। रात्रि में १०-१० बजे श्रीहरि प्राकट्य की आरती के दर्शन हजारो हरिभक्तजनो ने किए।

ता. ७, ८, ९ अप्रेल के दिन अपने मंदिर में रामनवमी के निमित्त पर सत्संग सभा का दिव्य आयोजन किया गया। संतो और हरिभक्तोंने भव्य आयोजन किया। पू. देव स्वामी की प्रेरणा से ठाकुरजी की २० हजार डोलर के नोटो के दान के लिये बोली बोली गयी। दूसरी अप्रेल के दिन मंदिर में सत्संग सभा में पू. महंत स्वामी और विहोकन मंदिर के महतं स्वामी माधव स्वामीने भगवान को कैसे भजन करना है और कैसे उनकी भक्ति करनी है यह समझाया तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की अक्षरसह आज्ञा बिना संकोच के निभानी चाहिए तो ही हमारा श्रेय और कल्याण होगा। यजमान प.भ. रतीलाल शाह का स्वामीने सन्मान किया था। इस तरह मंदिर में सभी उत्सव को धामधूम से मनाया गया।

- प्रवीणभाई शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर एल.ए. (U.S.A.)

L.A. श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्रीहरि जयंती रामनवमी को २२५ वी प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर महंत स्वामी केशवचरणदासजी की प्रेरणा से और ट्रस्ट कमिटी के आयोजन से ता. ७-४-०६ से ९-४-०६ तक श्री सत्संगिभूषण ग्रंथ की कथा स्वामी घनश्यामदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। दोपहर को १२-०० बजे श्री रामचंद्रजी भगवान का प्राकट्योत्सव धामधूम से मनाया गया। २२५ मिनिट की धून का भी सुंदर आयोजन किया गया। यजमान को सत्संगीभूषण ग्रँथ भेट स्वस्म प्रदान किया गया। *- नटुभाई पटेल प्रमुखश्री*

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ओस्ट्रेलिया)

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कृपा आशिष से यहाँ सत्संग की प्रवृत्ति विशेष चल रही है।

प.पू. श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा सत्संग प्रवृत्ति अच्छी होती है।

प.भ. अजलेश पटेल तथा श्री व्रज मंदिर में सेवा प्रदान करतें हैं। श्री सुरेश पटेल तथा श्री धर्मेश वडोदरीया वेब साईट तथा डेटाबेज की सेवा प्रदान करते है। श्री पंक्ति, श्री घनश्याम पटेल मंदिर की लायब्रेरी का कामकाज संभालते हैं। श्री तेजस पटेल, श्री भाविन देहीया, मंदिर में सभा संचालन की कार्यवाही करते हैं। श्री महेन्द्र, रजनीकांत और बोबी आदि भाव कोर्नर का कार्यभार संभालते हैं।

सत्संग सभा: ता. १२-३-०६ सभा प.भ. रयजीभाई दहीया, ता. १९-३-०६ प.भ. सुरज खीमजीभाई वाधजीयाणी की तरफ से सभा हुई थी ता. २६-३-०६ एकादशी की सुबह १० से साम के ४-०० बजे तक श्री स्वामिनारायण मंहामंत्र पाठ का समूह पारायण किया गया। ईस तरह सीडनी मंदिर में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का भजन-स्मरण हरिभक्त सभी मिलकर करते हैं।

- तेजस सी. पटेल

अक्षरनिवासी संत हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

बडोल-भाल : सर्वोपरि श्रीजी महाराज जिस गाँव में रैयाखटाणा के कट दूध तथा अन्य भोज्य पदार्थ खाकर स्के थे और जिसके घर स्कर अद्‌भुत लीला किये थे ऐसे रैया खटाणां के वंशज प.भ. मोहनभाई गणेशभाई खटाणा फाल्गुन वद अमावास्या के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अंबापुर (जि. गांधीनगर) : प.भ. रमणभाई डाह्याभाई पटेल ता. ११-३-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

नारायणपर (कावरी) उपलोवास (कच्छ) : प.भ. करशनभाई रामजी वरसाणी ता. ९-३-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

हीरावाडी-बापुनगर : प.भ. पोपटभाई वल्लभभाई की माताजी प.भ. पार्वतीबहन ता. १७-४-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई है।



सुरत रामपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में आरती उतारते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



सर्वोपरि श्रीहरि जैसा ही उनका अपर स्वरूप प.पू. बडे महाराजश्री के लिए संप्रदाय के दोनो देश के हरिभक्तों को खूब महिमा है । जो सुरत शहर के २०० मकान में पदार्पण के दौरान रोड पर फूल डालकर स्वागत करते है ।



प.भ. नंदुभाई पटेल के लिए यह अवसर उनके जीवन को उज्जवल तथा धन्य बना दिया । अनेक जन्मो के पुण्य से यह सुख मिलता है ।



प.भ. नंदुभाई पटेल (मोटपवाले) यहाँ विदाई के अवसर पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



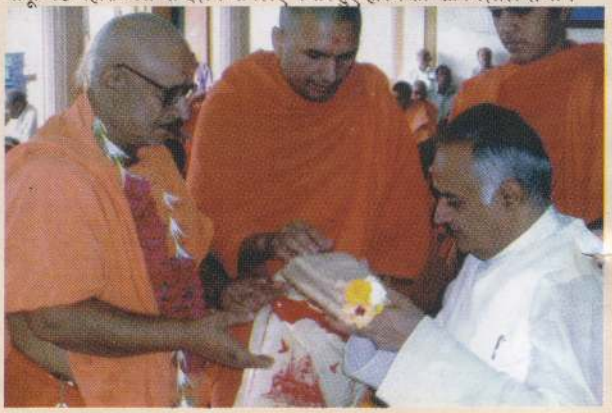
प.भ. भगवानजीभाई परमार (अंबाणा-हालार) प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे है ।



प.पू. बडे महाराजश्री के दर्शन के लिए पधारे हुए हरिभक्तों की विशाल सभा ।



कांकरिया मंदिर में मास्ति यज्ञ करते हुए प.प. बडे महाराजश्री ।



प.पू. बडे महाराजश्री को प्रसादी की चीजे अर्पण करते हुए हरिसेवक स्वामी ।

SHREE SWAMINARAYAN REG. NO. GUJ.581 REG. NO. G.A.M.C. 003 Valid up to June 2006
permitted to Post AHME.P.S.O. On 11th of Every Month



रामनवमी-श्रीहरि जयन्ती उत्सव पर
आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



Praful Kharsani

गुजरात की प्राण समान सरदार सरोवर डेम का अवरोध दूर हो इसलिए मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी उपवास पर उतरे थे । उनके इस कार्य में सहयोग देने के लिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तथा कार्य निर्विघ्न संपन्न हो ऐसी श्रीहरि को प्रार्थना की थी ।